Syllabus for First Year of Bachelor of Arts in HINDI
(With effect from the academic year 2023-2024)

SEMESTER-II

Paper No.- AEC

Course Title - हिन्दी भाषा श्रवण- लेखन-वाचन-पठन-पाठ्न, कौशल्य

No.of Credits – 02

COURSE CODE - HNAE101

Type of Vertical : Ability Enhancement Courses (AEC)

Learning Outcomes Based on BLOOM's Taxonomy:

श्रवण कौशल, वाचन कौशल परिभाषा, भेद और उदहारण : भाषा कौशल- श्रवण, भाषण ,वाचन, लेखन श्रवण कौशल, वाचन कौशल परिभाषा, भेद और उदहारण are the parts of Hindi Language skills section in Hindi Pedagogy. श्रवण कौशल, वाचन कौशल topic comes in CTET exam which contains 2-4 questions.

Hindi Language Skills are listening, speaking, writing, reading and we are here about to learn श्रवण कौशल, वाचन कौशल परिभाषा, भेद और उदहारण. Here we are going to श्रवण कौशल, वाचन कौशल परिभाषा, भेद और उदहारण in Hindi Language.

Hindi Language Study Notes For All Teaching Exams

भाषा कौशल– श्रवण कौशल , वाचन कौशल

भाषा कौशल

भाषा कौशल एक अभिव्यक्ति का साधन है जिसमें सुनना, बोलना, पढ़ना और लिखना शामिल है।

भाषा कौशल की विशेषताएँ

कौशल भाषा का व्यवहारिक पक्ष है।

बालक की सम्प्रेषणीयता उसके भाषा कौशल पर निर्भर करती है।

भाषा कौशल अर्जित किया जाता है जो प्रशिक्षण से आता है।

भाषा कौशल में शाब्दिक अन्तःक्रिया होती है।

भाषा कौशल से मानसिक, शारीरिक, ज्ञानेन्द्रियाँ आदि सभी क्रियाएँ क्रियाशील रहती हैं।

पहले के कौशल बाद के कौशल से अच्छे माने जाते हैं।

भाषा कौशल अन्तःसम्बन्धित होते हैं।

भाषा कौशलों का विकास धीरे-धीरे होता है।

श्रवण कौशल

किसी का वाचन सुनने और सुनकर अर्थ एवं भाव को समझने की क्रिया श्रवण कौशल कहलाती है।

श्रवण कौशल के उद्देश्य

दूसरों की बात को ध्यानपूर्वक सुनने की आदत डालना।

दूसरे के द्वारा किए गए उच्चारण को सुनकर शुद्ध उच्चारण का अनुकरण करना।

शुद्ध सामग्री का अर्थ समझने की योग्यता विकसित करना।

वक्ता के मनोभावों को समझने में निपुण बनना।

ध्वनियों का विभेदीकरण करने की क्षमता विकसित करना।

छात्रों में शब्द भण्डार की वृद्धि करना।

समाज, व्यवहार, जीवन सम्बन्धित महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान करना।

श्रवण कौशल की विधियाँ

सस्वर पाठ

प्रश्नोत्तर विधि

वाद-विवाद विधि

भाषण विधि

नाटक मंचन

वाचन कौशल

अपने भावों और विचारों को मौखिक भाषा के द्वारा बोलकर अभिव्यक्त करना ही वाचन कौशल कहलाता है।

वाचन कौशल के उद्देश्य

अपने भावों, विचारों, अनुभवों को सरलतापूर्वक, स्पष्ट ढंग से व्यक्त करने के योग्य बनना।

शुद्ध उच्चारण, उचित स्वर, उचित गति एवं हाव-भाव के साथ बोलना सीखना।

निसंकोच होकर अपने विचारों को व्यक्त करने के योग्य बनना।

परस्पर वार्तालाप करने के योग्य बनना।

धारा प्रवाह बोलने के योग्य बनना।

स्वाभाविक रूप से बोलने के भाव जागृत करना।

अपने विचारों को प्रभावोत्पादक ढंग से प्रस्तुत करना।

आदर्श वाचन में अध्यापक अपने वाचन को गति, यति, आरोह-अवरोह, स्वराघात को ध्यान में रखकर कक्षा में प्रस्तुत करता है।

अध्यापक द्वारा आदर्शवाचन के उपरान्त छात्रों द्वारा कक्षा में अनुकरण किया जाता है। पाठ के भावानुसार वाचन पैदा करने की क्षमता विकसित करना तथा ओजपूर्ण एवं उच्च स्वर से शृंगार रस के शिक्षण का वाचन आदि होता है।

लिखित सामग्री को बिना आवाज निकाले पढ़ना मौन वाचन कहलाता है, मौन वाचन के माध्यम से छात्रों में स्वाध्याय की रूचि जागृत की जाती है।

वाचन कौशल की शिक्षण विधियाँ

सस्वर वाचन

सस्वर वाचन के माध्यम से शिक्षक छात्रों की मौखिक अभिव्यक्ति का विकास कर सकता है।

शिक्षक पहले स्वयं अनुच्छेद का वाचन करता है, फिर कक्षा के छात्रों से सस्वर वाचन कराता है।

छात्रों की मौखिक अभिव्यक्ति सम्बन्धी संकोच दूर हो जाता है तथा उनका उच्चारण शुद्ध हो जाता है।

कविता पाठ

छोटे बच्चों की बालगीतों व कविताओं में अधिक रूचि होती है।

शिक्षक को चाहिए कि वह छात्रों को कविता याद करने के लिए उत्साहित करे तथा किसी समारोह आदि में उचित हाव-भाव, आरोह-अवरोह तथा अंग-संचालन के साथ सुनाने का अवसर प्रदान करें।

कहानी सुनना

कहानी कहना वाचन कौशल का एक सशक्त साधन है।

छोटे बच्चे कहानियाँ अधिक पसंद करते हैं। शिक्षक पहले छात्रों को कहानी सुनाए, फिर उसी कहानी को सुनाने के लिए छात्रों से कहें।

शिक्षक कहानी के वाचन में छात्रों की यथासम्भव सहायता करें। शिक्षक ध्यान रखें कि कहानी छात्रों के मानसिक स्तर के अनुरूप हो ।

छात्रों की कल्पना-शक्ति के विकास के लिए शिक्षक अधूरी कहानियों को छात्रों से पूरी करा सकता है। शिक्षक छात्रों से मौखिक प्रश्न पूछकर छात्रों में क्रमबद्ध तरीके से वर्णन कौशल, चिन्तन-मनन व कल्पना शक्ति का विकास कर सकता है।

चित्र वर्णन

छोटे बच्चे चित्र देखने में रूचि लेते हैं। अत: चित्रों के माध्यम से भी उनके वाचन कौशल का विकास किया जा सकता है।

शिक्षक छात्रों को चित्र दिखाकर उसके बारे में उनके भावों को सचेत करके उससे सम्बन्धित वर्णन करा सकते है। कहानी की विभिन्न घटनाओं के चित्र दिखाकर उनके आधार पर छात्रों को कहानी सुनाने के लिए प्रेरित किया जा सकता है।

पशु-पक्षी का चित्र कक्षा में टाँगकर उसके बारे में बच्चों से बहुत-सी बातें पूछी जा सकती हैं। वाचन कौशल के विकास के लिए यह एक रोचक विधि है।

प्रश्नोत्तर

छात्रों के वाचन कौशल का विकास करने के लिए प्रश्नोत्तर एक अच्छी विधि है।

इसमें अध्यापक छात्रों से प्रश्न पूछकर उनसे प्राप्त उत्तरों द्वारा उनकी श्रवण अभिव्यक्ति को विकसित करता है।

अध्यापक को चाहिए कि वह छात्रों से पूर्ण वाक्यों में उत्तर स्वीकार करे। यदि उत्तर अधूरा या अशुद्ध हो तो उसे सहानुभूति पूर्ण ढंग से ठीक कराए।

वार्तालाप

शिक्षक छात्रों से औपचारिक व अनौपचारिक दोनों तरह का वार्तालाप करके उनके वाचन कौशल का विकास कर सकता है।

शिक्षक छात्रों को अलग-अलग भूमिकाएं देकर उनका परस्पर 15 वार्तालाप करा सकता है। वार्तालाप कक्षा में, कक्षा से बाहर, खेल के मैदान में या घूमते हुए कहीं भी किया जा सकता है।

छात्रों के वार्तालाप में शिक्षक की भाषा सरल, स्पष्ट, व्यवस्थित व जिज्ञासा को प्रेरित करने वाली हो। इससे बालक देश-काल व पात्रानुकूल अभिव्यक्ति को सीख पाते हैं।

वाद-विवाद

वाद-विवाद में छात्र पूर्व-निर्धारित विषय पर विचारों को व्यक्त करते हैं। कुछ छात्र पक्ष व कुछ विपक्ष में विचार प्रस्तुत करते हैं।

वाद-विवाद से विचाराभिव्यक्ति को तर्कपूर्ण ढंग से प्रतिपादित करने की कुशलता आती है।

वाद-विवाद का विषय पहले से निर्धारित करके छात्रों को सूचित करना चाहिए जिससे वे उसकी अच्छी तरह तैयारी कर सकें।

भाषण

भाषण मौखिक अभिव्यक्ति विकसित करने का एक सशक्त साधन है।

अत:छात्रों को भाषण देने के प्रचुर अवसर दिए जाने चाहिएँ इसमें शिक्षक पूर्व-निर्धारित किसी विषय पर छात्रों को भाषण देने का अवसर प्रदान कर सकता है।

भाषण के माध्यम से छात्र किसी विषय पर अधिक से अधिक विचारों का संकलन व उन्हें क्रमबद्ध तरीके से व्यक्त करना सीखते हैं।

शिक्षक को छात्रों का मार्गदर्शन करके उन्हें भाषण प्रतियोगिता के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए। भाषण के लिए ऐसे विषयों का चयन किया जाना चाहिए जो छात्रों के मानसिक स्तर के अनुरूप, उपयोगी व रोचक हो।

नाटक मंचन

मौखिक अभिव्यक्ति के सभी गुणों को विकसित करने के लिए नाटक एक उपयोगी साधन है।

इससे उचित हाव-भाव, उतार-चढ़ाव, प्रवाह, अवसर के अनुकूल भाषा आदि का अभ्यास कराया जा सकता है।

टेप रिकॉर्डर

टेप रिकॉर्डर के माध्यम से छात्रों को रिकॉर्ड की गई अच्छी वार्ताएँ, भाषण, समसामयिक चर्चाएँ सुनाई जा सकती है।

उन्हें सुनाकर छात्रों को प्रवाहमयी भाषा बोलने के लिए उत्साहित किया जाता है। इसमें पहले छात्रों को ध्यान से सुनने के लिए कहा जाता है।

टेप रिकॉर्डर का बालकों के उच्चारण सुधारने में आवश्यकता अनुसार प्रयोग किया जा सकता है।

टेलीफोन

छात्रों को टेलीफोन या मोबाइल पर बातचीत का अवसर देकर उनकी मौखिक अभिव्यक्ति को विकसित किया जा सकता है।

टेलीफोन पर छात्रों की बातचीत सुनकर शिक्षक उनकी मौखिक अभिव्यक्ति की कमियों का निराकरण कर सकता है।

इससे छात्रों की मौखिक अभिव्यक्ति में संक्षिप्तता, सार्थकता, शिष्टता, सुबोधता आदि गुणों को विकसित किया जा सकता है।... Read more at:
https://www.adda247.com/teaching-jobs-exam/hindi-pedagogy-study-notes-shravan-vachan-koshal/

भाषा शिक्षण/भाषा कौशल

भाषा कौशल

भाषा कौशल का अर्थ-

भाषा कौशल से तात्पर्य है|भाषा के ठीक तरह से काम करने की योग्यता या सामर्थ्य हासिल करना । अर्थात् अध्येता भाषा के चारों कौशलों सुनना, बोलना, पढ़ना और लिखना में पूर्ण रूप से दक्षता हासिल कर सके। अध्येता के भाषा सीखने पर यदि उसका भाषा के उपरोक्त चारों कौशल पर पूर्णता अधिकार ना हो तब भाषा कौशल अधूरा रह जाता है । अध्यापक को

चाहिए कि वह अध्येता को भाषा शिक्षण के दौरान भाषा के चारों कौशलों का सामान रूप से विकास करवाए ।

डैली करंट अफेयर्स हिन्दी

'व्यक्ति की संप्रेषण की सक्षमता भाषा कौशलों की दक्षता पर ही निर्भर होती है। भाषा की प्रभावशीलता का मानदंड बोधगम्यता होती है। जिन भावो एवं विचारों की अभिव्यक्ति करना चाहते है उन्हें कितनी सक्षमता से बोधगम्य कराते है यह भाषा कौशलों के उपयोग पर निर्भर होता है।'[[1]

हमारा देश बहुभाषी देश है| अनेक क्षेत्रीय बोलियां और भाषाएं यहां बोली जाती हैं| भाषा न केवल शिक्षा प्राप्ति का साधन है बल्कि विचार ,विनिमय ,प्रशासन ,व्यापार ,संचार, पर्यटन ,रोजगार आदि के लिए भी भाषा शिक्षण किया जाता है|

भाषा शिक्षण को दो भागों में बाटा गया है|

- 1.प्रधान कौशल
- 2.गौण कौशल

1.प्रधान कौशल :

भाषा का सर्वप्रथम कार्य संप्रेषण करना ही है। यह संप्रेषण भाषा के बिना अधूरा है|संप्रेषण के लिए हमें भाषा के उच्चरित रूप की ही आवश्यकता होती है| भाषा का उच्चरित भाषा का वह रूप है जिसे एक निरीक्षण व्यक्ति भी प्रयोग करता है| इसलिए इससे संबंधित कौशल ही प्रधान कौशल कहे जाते हैं| इसमें निम्नलिखित दो कौशल आते हैं -

- 1. सुनना
- 2. बोलना

2.गौण कौशल :

बालक अपनी प्रारंभिक भाषा परिवार और समाज से सीखता है| परिवार और समाज ही भाषा सीखने का उसका प्रथम स्कूल होता है| उसके बाद वह विद्यालय जाकर लिखना-पढ़ना सीखता है| इस प्रकार के भाषा शिक्षण को गौण कौशल के अंतर्गत परिभाषित किया गया है| इसके दो रूप हैं-

- 1. पढ़ना
- 2. लिखना

भाषा कौशल- श्रवण, भाषण ,वाचन, लेखन-

1.श्रवण कौशल (Listening Skill):

'श्रवण' शब्द 'श्रु' धातु से बना है जिसका संबंध 'सुनने' और 'अधिगम' करना आदि से है । 'श्रवण' अंग्रेजी के शब्द 'Listening' शब्द का पर्याय है । 'श्रवण' केवल ध्वनियों को सुनना भर नहीं है बल्कि उन ध्वनियों को सुनकर उसका अर्थ निकालने, सुनी हुई बातों पर चिंतन मनन करने और अर्थ की प्रतिक्रिया देने से है । श्रवण कौशल के लिए मस्तिष्क की एकाग्रता एवं इंद्रियों का संयम होना अत्यंत आवश्यक है । बालक के जन्म लेने के उपरांत उसकी प्रारंभिक शिक्षा उसकी श्रवण शक्ति पर निर्भर करती है ।यदि छात्र की श्रवण इन्द्रियों में दोष है, तो वह न भाषा सीख सकता है और न अपने मनोभावों को अभिव्यक्त कर सकता है। अत: उसका भाषा ज्ञान शून्य के बराबर ही रहेगा। बालक सुनकर ही अनुकरण द्वारा भाषा ज्ञान अर्जित करता है|

डॉक्टर किशोरी लाल शर्मा श्रवण कौशल के अर्थ को स्पष्ट करते हुए कहते हैं कि-
"श्रवण कौशल में केवल ध्वनि श्रवण का ही समावेश नहीं होता है, अपितु जो कुछ हम सुनते हैं, उसे पहचानते हैं, समझते हैं और अर्थ ग्रहण करके उसे स्मरण रखते हैं इसी प्रकार किसी भाषण को ग्रहण करने की प्रक्रिया को निष्क्रिय नहीं कहा जा सकता, यह एक कड़ी है तथा सोद्देश्य है ।"

श्रवण कौशल शिक्षण का महत्व (Importance of Listening Skill):

- बच्चा जन्मोपरान्त ही सुनने लग जाता है। ये ध्वनियाँ उसके मन मस्तिष्क पर अंकित हो जाती हैं। ये अंकित ध्वनियाँ ही बच्चे के भाषा ज्ञान का आधार बनती हैं। अच्छी प्रकार से सुनने के कारण ही बालक ध्वनियों के सूक्ष्म अन्तर को समझ पाता है।
- श्रवण कौशल ही अन्य भाषायी कौशलों को विकसित करने का प्रमुख आधार बनता है।
- इससे ध्वनियों के सूक्ष्म अन्तर को पहचानने की क्षमता विकसित होती है।
- इसे अध्ययन की आधारशिला भी कहा जाता है।
- इससे वाचन कौशल का विकास होता है।
- इससे लेखन कौशल के विकास में भी सहायता मिलती है|

[२]

श्रवण कौशल के उद्देश्य (Objectives of Listening Skill):

- सुनकर अर्थ ग्रहण करने की योग्यता का विकास करना।
- छात्रों में भाषा व साहित्य के प्रति रूचि पैदा करना।
- छात्रों को साहित्यिक गतिविधियों में भाग लेने व सुनने के लिए प्रेरित करना।
- श्रुत सामग्री का सारांश ग्रहण करने की योग्यता विकसित करना।

- धैर्यपूर्वक सुनना, सुनने के शिष्टाचार का पालन करना।
- ग्रहणशीलता की मन: स्थिति बनाए रखना। शब्दों, मुहावरों व उक्तियों का प्रसंगानुकूल भाव व अर्थ समझ सकना।
- किसी भी श्रुत सामग्री को मनोयोगपूर्वक सुनने की प्रेरणा प्रदान करना।

[3]

श्रवण कौशल के विकास की समस्याएं (Problems in the development of hearing skills):

सामान्य रूप से यह देखा जाता है कि अनेक छात्र शिक्षक द्वारा विषय वस्तु को ध्यान पूर्वक नहीं सुनते हैं इससे शिक्षक क्रोधित होकर उन पर अनुशासनहीनता का आरोप लगाते हैं तथा उनको दंड प्रदान करते हैं इससे उनका मनोबल टूट जाता है तथा छात्र विद्यालय व्यवस्था में अरुचि करने लगते हैं। श्रवण कौशल के विकास में कुछ प्रमुख समस्याएं हैं जिनका वर्णन निम्नलिखित रुप से किया जा सकता है-

शैक्षिक वातावरण का अभाव (Lack of educational environment)-

प्रायः देखा जाता है कि शिक्षक द्वारा कक्षा में शैक्षिक वातावरण तैयार किए बिना ही गठन प्रारंभ कर दिया जाता है अर्थात शिक्षण प्रारंभ कर दिया जाता है। इस स्थिति में छात्र पूर्ण मनोयोग के साथ श्रवण नहीं कर पाते हैं ,क्योंकि वह मानसिक रूप से श्रवण करने के लिए तैयार नहीं होते हैं|

कठिन भाषा का प्रयोग (Use of difficult language)-

जब शिक्षक द्वारा अपने कथन में या प्रस्तुतीकरण में कठिन भाषा का प्रयोग किया जाता है, तो इस स्थिति में छात्र विषयवस्तु के भाव को समझ नहीं पाता है और ध्यानपूर्वक श्रवण नहीं कर पाता है ,क्योंकि उस श्रवण के प्रतीक उसमें कोई रुचि नहीं होती है|

अशुद्ध उच्चारण (Mispronunciation)-

सामान्य रूप से अनेक शिक्षकों में ही उच्चारण संबंधी दोष पाए जाते हैं जिसके आधार पर छात्र उनके द्वारा प्रस्तुत विचारों को ध्यान पूर्वक नहीं सुनते हैं| प्रत्येक छात्र यह जान जाता है कि प्रस्तुत सामग्री ज्ञानवर्धक एवं स्पष्ट नहीं है, तो उसके प्रतिभा ध्यान नहीं देते हैं|

शिक्षण अधिगम सामग्री के प्रयोग का अभाव(Lack of use of teaching materials)-

श्रवण कौशल के विकास पर उस समय बाधा उत्पन्न होती है जब शिक्षक द्वारा विषयवस्तु के प्रस्तुतीकरण में शिक्षण अधिगम सामग्री का प्रयोग नहीं किया जाता है | शिक्षण अधिगम

सामग्री के अभाव में छात्र एक मूक श्रोता की भांति कार्य करते हैं तथा उनकी सामग्री में कोई रूचि नहीं होती है | परिणाम स्वरूप छात्रों में श्रवण कौशल का विकास नहीं हो पाता है|[४]

श्रवण कौशल विकास हेतु उपाय एवं समस्याओं का समाधान (Measures for hearing skills development and solutions to problems):

भाषा शिक्षक का यह प्रमुख दायित्व होता है कि वह भाषा संबंधी कौशलों के विकास में अपना पूर्ण योगदान प्राप्त करें| श्रवण कौशल भाषा का प्रथम एवं महत्वपूर्ण क्वेश्चन है इसलिए कक्षा एवं विद्यालय स्तर पर श्रवण कौशल के विकास हेतु तथा इसके विकास मार्ग में आने वाली विभिन्न समस्याओं के समाधान के लिए निम्नलिखित उपाय करने चाहिए-

1. छात्रों की योग्यता के अनुसार शिक्षण प्रदान करना चाहिए अर्थात प्रस्तुत सामग्री का स्वरूप छात्रों की योग्यता के अनुरूप होना चाहिए जिससे छात्र उसको पूर्ण रूप से सुन सकें|

2. छात्रों के समक्ष सामग्री के प्रस्तुतीकरण से पूर्व कचा कच का वातावरण इस प्रकार का होना चाहिए जिससे छात्र शिक्षक के प्रस्तुतीकरण को ध्यान पूर्वक सुन सकें| जैसे बैठने की उचित व्यवस्था तथा शांति का वातावरण |

3. श्रवण कौशल के विकास हेतु छात्र की मनोदशा का ज्ञान करना भी एक शिक्षक के लिए आवश्यक है ,क्योंकि छात्र मानसिक रूप से जब तक श्रवण के लिए तैयार नहीं होगा तब तक श्रवण कौशल का विकास संभव नहीं होगा |

4. शिक्षक को सामग्री के प्रति करण से पूर्व की सभी समस्याओं का समाधान कर देना चाहिए इससे छात्रों को दो प्रकार से लाभ होता है| प्रथम अवस्था में छात्र शिक्षक के प्रति विश्वास रखने लगता है तथा दूसरी अवस्था में वह उसके तथ्यों को ध्यानपूर्वक सुने लगता है|[५]

2.भाषण कौशल(Speech skills):

भाषण का अर्थ है "मौखिक अभिव्यक्ति"| अंग्रेजी में इसे "Speaking" या "Speech" कहते हैं| जब छात्र अपने विचारों एवं भावों को स्पष्ट रूप से प्रकट करने का प्रयास करता है, तो उसे भाषण कौशल का सहारा लेना पड़ता है| भाषा कौशल के आधार पर ही उनकी अभिव्यक्ति का मूल्यांकन किया जाता है |जब एक छात्र सस्वर एवं धाराप्रवाह रूप में बोलते हुए अपने विचारों को प्रस्तुत करता है,तो यह माना जाता है कि उसमें वाचन कौशल की योग्यता है |

फ्रांसीसी लेखक कार्लाइल ने कहा है कि- *"भाषण के दौरान कुछ पल का विराम और मौन भाषण शक्ति को प्रखर बनाते हैं|"*

भाषण कौशल के उद्देश्य एवं महत्व(Aims and Importance of Speaking Skills):

वाचन कौशल के उद्देश्य एवं भाषा शिक्षण में इसके महत्व को निम्नलिखित रुप से स्पष्ट किया जा सकता है-

1. भाषण कौशल का महत्व(Importance of Speaking Skills)-

वाचन कौशल को महत्वपूर्ण माना जाता है क्योंकि भाषा की शिक्षा का आधार वाचन कौशल होता है इसके महत्व को अग्रलिखित रूप में स्पष्ट किया जा सकता है-

1. दैनिक जीवन में सभी कार्य भाषण कौशल के आधार पर ही संभव है जो छात्र जितना अधिक वाकपटु होता है उतना ही जीवन में सफल माना जाता है|

2. भाषण कौशल के माध्यम से छात्र द्वारा कठिन विचारों को भी सरलतम रूप में प्रस्तुत किया जा सकता है ,तथा दूसरे के मनोभावों को भी सरलतम रूप में समझा जा सकता है|

3. भाषण कौशल के माध्यम से छात्रों का व्यक्तित्व विकसित होता है, क्योंकि वे प्रत्येक तथ्य का प्रस्तुतीकरण सारगर्भित एवं प्रभावी रूप से करने में सक्षम होते हैं|

4. भाषण कौशल के माध्यम से बालकों के शब्द भंडार में वृद्धि होती है, क्योंकि वाचन में अनेक प्रकार के नवीन शब्दों को बोलने का प्रयास करता है|

2.भाषण कौशल के उद्देश्य (Aims of Speaking Skills)-

भाषण कौशल के प्रमुख उद्देश्यों को निम्नलिखित रुप में स्पष्ट किया जा सकता है-

1. छात्रों में अपने भाव एवं विचारों को प्रभावी ढंग से प्रस्तुतीकरण की योग्यता का विकास करना जिससे कि वे सभी तथ्यों का सारगर्भित प्रस्तुतीकरण कर सकें|

2. भाषण कौशल के उद्देश्य छात्रों में क्रमिक रूप से तथा धाराप्रवाह रूप में बोलने की क्षमता विकसित करना है जिससे विभिन्न वासी प्रकरणों पर अपनी दक्षता का प्रदर्शन कर सकें|

3. छात्रों में संकोच एवं झिझक को दूर करके आत्मविश्वास की भावना जागृत करना तथा जिससे भाषा के अनेक प्रकरणों पर धारा प्रवाह रूप में आत्मविश्वास के साथ बोल सकें|

4. छात्रों में प्रसंगानुसार मुहावरे एवं लोकोक्तियां के प्रयोग की क्षमता विकसित करना जिससे वे अपने प्रस्तुतीकरण को प्रभावोत्पादक बना सकें|

भाषण कौशल संबंधी प्रमुख समस्याएं(Speaking Skill Related Main Problems):

भाषा कौशल के विकास में अनेक प्रकार की समस्याएं भाषा शिक्षक द्वारा अनुभूत की जाती है,इन समस्याओं के कारण ही भाषण कौशल का विकास संभव नहीं हो पाता है इसलिए छात्रों में सर्वप्रथम भाषण कौशल के विकास हेतु उनके मार्ग की बाधाओं को जानना तथा उन्हें दूर करना एक भाषा शिक्षक का प्रमुख दायित्व है| भाषण कौशल की प्रमुख समस्याएं निम्नलिखित है-

1. भाषण कौशल की प्रमुख बाधा छात्र में आत्मविश्वास के अभाव को माना जाता है| इसके कारण छात्र अपने कथन में ओजस्विता नहीं ला पाते हैं|

2. छात्रों द्वारा अपने भाषण में शब्दों का अशुद्ध उच्चारण किया जाता है जिससे कि भाषण में अर्थ का अनर्थ उत्पन्न हो जाता है तथा भाषण की सार्थकता तथा एवं प्रभावशीलता समाप्त हो जाती है|

3. छात्र अपने भाषण में दोषपूर्ण वाक्यों का प्रयोग करते हैं जिनमें कर्ता, क्रिया, कर्म एवं विशेषण को उचित स्थान नहीं मिलता है इससे भाषण कौशल दोषपूर्ण हो जाता है|

4. भाषण में प्रकरण एवं विधा की आवश्यकता के अनुसार भाव एवं लाइव का अभाव भी भाषण को दोषपूर्ण बना देता है तथा भाषण प्रभावहीन हो जाता है|

भाषण कौशल के विकास के उपाय एवं समस्याओं के समाधान(Measures and Solution of Problems of Development of Speaking Skills):

भाषण कौशल के विकास में भाषा शिक्षक एवं विद्यालय व्यवस्था की महत्वपूर्ण भूमिका होती है|

1. शिक्षक को भाषण कौशल के विकास हेतु बालक में आत्मविश्वास की भावना विकसित करनी चाहिए तथा उसके संकोच को समाप्त करना चाहिए|

2. छात्रों को शिक्षक द्वारा उसके भाषण को सकारात्मक रूप में स्वीकार करना चाहिए तथा उनकी त्रुटियों को दूर करने में आत्मीय व्यवहार का सहारा लेना चाहिए|

3. शिक्षक द्वारा छात्रों को भाषण संबंधी प्रतियोगिताओं में भाग लेने के लिए प्रेरित करना चाहिए तथा समय-समय पर उनको पृष्ठ पोषण प्रदान करना चाहिए|

4. छात्रों को भाषण में एक ही शब्द जैसे 'मतलब' तथा एक ही वाक्य के प्रयोग को बार-बार करने से जिससे भाषण को प्रभावोत्पादक बनाया जा सके|

[६]

3.वाचन/पठन कौशल (Reading Skill):

[७] भाषा शब्द से ही ज्ञात होता है कि भाषा का मूल रूप उच्चरित रूप है। इसका दृष्टिकोण प्रतीक लिपिबद्ध होता है। मुद्रित रूप लिपिबद्ध रूप का प्रतिनिधि है। जब हम बच्चे को पढ़ाना आरम्भ करते हैं तो अक्षरों के प्रत्यय हमारे मस्तिष्क के कक्ष भाग में क्रमबद्ध होकर एक तस्वीर बनाती हैं और हम उसे उच्चरित करते हैं। यह क्रिया जिसमें शब्दों के साथ अर्थ ध्वनि भी निहित है। वाचन कहलाती है।

कैथरीन ओकानर के मतानुसार *"वाचन पठन वह जटिल अधिगम प्रक्रिया है, जिसमें दृश्य, श्रव्यों सर्किटों का मस्तिष्ट के अधिगम केंद्र से संबंध निहित है|"*

वाचन/पठन कौशल का महत्व (Importance of Reading Skill):

- वाचन की जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में आवश्यकता होती है। वाचन की योग्यता न रखने से व्यक्ति संसार की सांस्कृतिक महानता में अपने अस्तित्व का आनन्द नहीं ले पाता।
- वाचन योग्यता के बिना मनुष्य के जीवन में कई प्रकार की बाधाएँ खड़ी हो जाती हैं।
- वाचन शिक्षा प्राप्ति में सहायक है।
- वाचन कौशल ज्ञानोपार्जक का साधन है, क्योंकि पाठ्य पुस्तक पढ़ने से तो केवल ज्ञान के दर्शन होते हैं। संदर्भ ग्रन्थ पढ़ने से ज्ञान की पिपासा कुछ हद तक शान्त होती है।
- आधुनिक युग 'विशिष्टताओं' का युग है, व्यक्ति जिस भी व्यवसाय मैं है वह विशिष्टता प्राप्त करना चाहता है, नवीनतम जानकारी प्राप्त करना चाहता, है या जानकारी उसे पुस्तकों से मिलती है|

वाचन/पठन कौशल के उद्देश्य (Objectives of Reading Skill):

- बालकों के स्वर में आरोह-अवरोह का ऐसा अभ्यास करा दिया जाए कि यथावसर भावों के अनुकूल स्वर में लोच देकर पढ़े।
- बालकों को वाचन के माध्यम से शब्द ध्वनियों का पूर्ण ज्ञान कराया जाता है वाचन की इस कला से छात्र मुँह व जिव्हा के उचित स्थान से ध्वनि उच्चारित करते रहेंगे।
- वाचन के माध्यम से शब्दों पर उचित बल दिया जाता है।
- छात्र पढ़कर उसका भाव समझें तथा दूसरों को भी समझाएँ वाचन का यह एक उद्देश्य है।
- वाचन के अक्षर, उच्चारण, ध्वनि, बल, निर्गम, सस्वरता आदि को सम्यक् संस्कार प्राप्त होता है।

वाचन/पठन संबंधी त्रुटियाँ (Errors Related to Reading):

- अटक-अटक कर पढ़ना।
- वाचन के समय अनुचित मुद्रा, पुस्तक को आँखों सन्निकट या दूर रखना।
- अशुद्ध उच्चारण।
- वाचन में गति का न होना।

- दृष्टि दोष से अक्षरों का ठीक दिखाई न देना।
- पाठ्य सामग्री का कठिन होना।
- अक्षर या संयुक्ताक्षरों संबंधी त्रुटियाँ।
- भावानुकूल आरोह-अवरोह का अभाव।
- वाचन संबंधी मार्ग दर्शन का अभाव।
- अध्यापक का व्यवहार।

वाचन/पठन संबंधी दोषों का निवारण (Prevention of Reading Related Defects):

- आवृत्ति-पुनरावृत्ति इसका अभिप्राय यह है कि बार-बार आवृत्ति या पुनरावृत्ति के माध्यम से अभ्यास कराकर उच्चारण संबंधी दोषों का निवारण किया जा सकता है।
- वातावरण परिवर्तन बच्चों को सिखाई जाने वाली भाषा हेतु उपयुक्त वातावरण उपलब्ध करवाकर पठन संबंधी दोषों का निवारण किया जा सकता है।
- चिकित्सा विधि यदि किसी अंग में कोई खराबी के कारण या भय, घबराहट आदि के कारण बच्चों के वाचन संबंधी कठिनाई हो, तो उसे चिकित्सकों की मदद से दूर किया जा सकता है।
- छात्रों के मानसिक स्तर के अनुकूल पाठ्य सामग्री का चुनाव|

4. लेखन कौशल (Writing Skill):

मौखिक रूप के अन्तर्गत भाषा का ध्वन्यात्मक रूप एवं भावों की मौखिक अभिव्यक्ति है। जब इन ध्वनियों को प्रतीकों के रूप में व्यक्त किया जाता है और इन्हें लिपिबऋ करके स्थायित्व प्रदान करते हैं, तो वह भाषा का लिखित रूप कहलाता है। भाषा के इस प्रतीक रूप की शिक्षा, प्रतीकों को पहचान कर उन्हें बनाने की क्रिया अथवा ध्वनि को लिपिबद्ध करना लिखना है।

लेखन शिक्षण के उद्देश्य (Objectives of Writing Skill):

- छात्र सोचने एवं निरीक्षण करने के उपरान्त भावों को क्रमबद्ध रूप से व्यक्त कर सकेगा।
- छात्र सुपाठ्य लेख लिख सकेगा।
- शब्दों की शुद्ध वर्तनी लिख सकेगा।
- छात्र ध्वनि, ध्वनि समूहों, शब्द, सूक्ति, मुहावरों का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।
- विराम चिन्हों का यथोचित प्रयोग कर सकेगा।
- अनुलेख, अतिलेख तथा श्रुतलेख लिख सकेगा।
- व्याकरण सम्मत भाषा का प्रयोग करने में सक्षम होंगे।
- वह वाक्यों में शब्दों, वाक्यांशों तथा उपवाक्यों का क्रम अर्थानुकूल रख सकेगा।
- विभिन्न रचना वाले वाक्यों का शुद्ध गठन करेगा।

लेखन कौशल के गुण (Merits of Writing Skill):

- लेखन, सुन्दर, स्पष्ट एवं सुडौल हो।
- उसमें प्रवाहशीलता एवं क्रमबद्धता हो।
- विषय (शिक्षण) सामग्री उपयुक्त अनुच्छेदों में विभाजित हो।
- भाषा एवं शैली में प्रभावोत्पादकता हो।
- भाषा व्याकरण सम्मत हो।
- अभिव्यक्ति संक्षिप्त, स्पष्ट तथा प्रभावोत्पादक हो।

लेखन शिक्षण की प्रविधियाँ (Techniques of Writing Skill):

- **मॉण्टेसरी विधि-** मॉण्टेसरी ने लिखना सिखाने में आँख, कान और हाथ तीनों के समुचित प्रयोग पर बल दिया है। उनके मतानुसार, पहले बालक को लकड़ी अथवा गत्ते या प्लास्टिक के बने अक्षरों पर ऊँगली फेरने को कहा जाए, फिर उन्हें पेन्सिल को उन्हीं अक्षरों पर घुमवाना चाहिए। पेन्सिल प्राय: रंगीन होनी चाहिए। इसी प्रकार बालक अक्षरों के स्वरूप से परिचित होकर उन्हें लिखना सीख जाता है।

- **रूपरेखानुकरण विधि-** इस विधि में शिक्षक श्यामपट्ट या स्लेट पर चाक या पेंसिल से बिंदु रखते हुए शब्द या वाक्य लिख देता है ,और छात्रों से उनके निशाने पर पेंसिल से लिखने के लिए बोलता है, जिससे शब्द, वाक्य, वर्ण उभर आए|इस प्रकार अभ्यास के माध्यम से वह वर्णों को लिखना सीख जाता है|

- **स्वतन्त्र अनुकरण विधि –** इसमें अध्यापक श्यामपट्ट, कापी या स्लेट पर अक्षरों को लिख देता है और छात्रों को कहता है कि उन अक्षरों को देखकर उनके नीचे स्वयं उसी प्रकार अक्षर बनाए।

- **तुलना विधि –** हिन्दी भाषी क्षेत्रों में तुलना विधि उपयोगी मानी जाती है। बालक को तीसरी चौथी कक्षा में मातृभाषा के लेखन का अभ्यास हो चुका होता है। अतः उससे तुलना करते हुए हिन्दी भाषा शीघ्रता से सीखी जा सकती है।

[९]

लेखन शिक्षण के लिए आवश्यक बातें(Things Needed for Teaching Writing):

ये बातें निम्नलिखित हैं-

1. बालक को लिखना तभी सिखायें जब वह लिखने में रुचि ले।

2. अक्षरों को सरल से कठिन के क्रम में लिखना सिखाया जाये जैसे-प, व, र, भ आदि अक्षर पहले क्ष, त्र, ज्ञ आदि कठिन अक्षर बाद में। वाक्य भी सरल से कठिन की ओर सूत्र के आधार पर लिखने सिखाये जायें।

3. अध्यापक को चाहिए कि वह बालक के लिखने की गति पर प्रारम्भ में ध्यान न देकर अक्षरों, शब्दों और वाक्यों की शुद्धता पर ध्यान दे।

4. प्रारम्भ में अक्षरों का आकार बड़ा होना चाहिए धीरे-धीरे अक्षरों के आकार छोटे किये जायें।

5. बालक के मन में लिखने के प्रति उदासीनता नहीं होनी चाहिए।

6. लिखना सिखाते समय बालक की व्यक्तिगत् विभिन्नता पर ध्यान देना चाहिए। सभी बालक एक सा नहीं लिख सकते।

7. लेखन कार्य पढ़े हुए अंश से सिखाना चाहिए। बालक पढ़ी हुई बात को आसानी से लिख लेते हैं।

3.वाचन/पठन कौशल (Reading Skill): वाचन/पठन कौशल का महत्व (Importance of Reading Skill): वाचन/पठन कौशल के उद्देश्य (Objectives of Reading Skill): वाचन/पठन संबंधी त्रुटियाँ (Errors Related to Reading): वाचन/पठन संबंधी दोषों का निवारण (Prevention of Reading Related Defects):

---

[७] भाषा शब्द से ही ज्ञात होता है कि भाषा का मूल रूप उच्चरित रूप है। इसका दृष्टिकोण प्रतीक लिपिबद्ध होता है। मुद्रित रूप लिपिबद्ध रूप का प्रतिनिधि है। जब हम बच्चे को पढ़ाना आरम्भ करते हैं तो अक्षरों के प्रत्यय हमारे मस्तिष्क के कक्ष भाग में क्रमबद्ध होकर एक तस्वीर बनाती हैं और हम उसे उच्चरित करते हैं। यह क्रिया जिसमें शब्दों के साथ अर्थ ध्वनि भी निहित है। वाचन कहलाती है।

कैथरीन ओकानर के मतानुसार "वाचन पठन वह जटिल अधिगम प्रक्रिया है, जिसमें दृश्य, श्रव्यों सर्किटों का मस्तिष्ट के अधिगम केंद्र से संबंध निहित है|"

वाचन/पठन कौशल का महत्व (Importance of Reading Skill):

- वाचन की जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में आवश्यकता होती है। वाचन की योग्यता न रखने से व्यक्ति संसार की सांस्कृतिक महानता में अपने अस्तित्व का आनन्द नहीं ले पाता।
- वाचन योग्यता के बिना मनुष्य के जीवन में कई प्रकार की बाधाएँ खड़ी हो जाती हैं।
- वाचन शिक्षा प्राप्ति में सहायक है।
- वाचन कौशल ज्ञानोपार्जक का साधन है, क्योंकि पाठ्य पुस्तक पढ़ने से तो केवल ज्ञान के दर्शन होते हैं। संदर्भ ग्रन्थ पढ़ने से ज्ञान की पिपासा कुछ हद तक शान्त होती है।
- आधुनिक युग 'विशिष्टताओं' का युग है, व्यक्ति जिस भी व्यवसाय में है वह विशिष्टता प्राप्त करना चाहता है, नवीनतम जानकारी प्राप्त करना चाहता, है या जानकारी उसे पुस्तकों से मिलती है|

वाचन/पठन कौशल के उद्देश्य (Objectives of Reading Skill):

- बालकों के स्वर में आरोह-अवरोह का ऐसा अभ्यास करा दिया जाए कि यथावसर भावों के अनुकूल स्वर में लोच देकर पढ़े।
- बालकों को वाचन के माध्यम से शब्द ध्वनियों का पूर्ण ज्ञान कराया जाता है वाचन की इस कला से छात्र मुँह व जिव्हा के उचित स्थान से ध्वनि उच्चारित करते रहेंगे।
- वाचन के माध्यम से शब्दों पर उचित बल दिया जाता है।
- छात्र पढ़कर उसका भाव समझें तथा दूसरों को भी समझाएँ वाचन का यह एक उद्देश्य है।
- वाचन के अक्षर, उच्चारण, ध्वनि, बल, निर्गम, सस्वरता आदि को सम्यक् संस्कार प्राप्त होता है।

वाचन/पठन संबंधी त्रुटियाँ (Errors Related to Reading):

- अटक-अटक कर पढ़ना।

- वाचन के समय अनुचित मुद्रा, पुस्तक को आँखों सन्निकट या दूर रखना।
- अशुद्ध उच्चारण।
- वाचन में गति का न होना।
- दृष्टि दोष से अक्षरों का ठीक दिखाई न देना।
- पाठ्य सामग्री का कठिन होना।
- अक्षर या संयुक्ताक्षरों संबंधी त्रुटियाँ।
- भावानुकूल आरोह-अवरोह का अभाव।
- वाचन संबंधी मार्ग दर्शन का अभाव।
- अध्यापक का व्यवहार।

वाचन/पठन संबंधी दोषों का निवारण (Prevention of Reading Related Defects):

- आवृत्ति-पुनरावृत्ति इसका अभिप्राय यह है कि बार-बार आवृत्ति या पुनरावृत्ति के माध्यम से अभ्यास कराकर उच्चारण संबंधी दोषों का निवारण किया जा सकता है।
- वातावरण परिवर्तन बच्चों को सिखाई जाने वाली भाषा हेतु उपयुक्त वातावरण उपलब्ध करवाकर पठन संबंधी दोषों का निवारण किया जा सकता है।
- चिकित्सा विधि यदि किसी अंग में कोई खराबी के कारण या भय, घबराहट आदि के कारण बच्चों के वाचन संबंधी कठिनाई हो, तो उसे चिकित्सकों की मदद से दूर किया जा सकता है।
- छात्रों के मानसिक स्तर के अनुकूल पाठ्य सामग्री का चुनाव|

4.लेखन कौशल (Writing Skill): लेखन शिक्षण के उद्देश्य (Objectives of Writing Skill): लेखन कौशल के गुण (Merits of Writing Skill):

मौखिक रूप के अन्तर्गत भाषा का ध्वन्यात्मक रूप एवं भावों की मौखिक अभिव्यक्ति है। जब इन ध्वनियों को प्रतीकों के रूप में व्यक्त किया जाता है और इन्हें लिपिबद्ध करके स्थायित्व प्रदान करते हैं, तो वह भाषा का लिखित रूप कहलाता है। भाषा के इस प्रतीक रूप की शिक्षा, प्रतीकों को पहचान कर उन्हें बनाने की क्रिया अथवा ध्वनि को लिपिबद्ध करना लिखना है।

लेखन शिक्षण के उद्देश्य (Objectives of Writing Skill):

- छात्र सोचने एवं निरीक्षण करने के उपरान्त भावों को क्रमबद्ध रूप से व्यक्त कर सकेगा।
- छात्र सुपाठ्य लेख लिख सकेगा।
- शब्दों की शुद्ध वर्तनी लिख सकेगा।
- छात्र ध्वनि, ध्वनि समूहों, शब्द, सूक्ति, मुहावरों का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।
- विराम चिन्हों का यथोचित प्रयोग कर सकेगा।
- अनुलेख, अतिलेख तथा श्रुतलेख लिख सकेगा।
- व्याकरण सम्मत भाषा का प्रयोग करने में सक्षम होंगे।
- वह वाक्यों में शब्दों, वाक्यांशों तथा उपवाक्यों का क्रम अर्थानुकूल रख सकेगा।
- विभिन्न रचना वाले वाक्यों का शुद्ध गठन करेगा।

लेखन कौशल के गुण (Merits of Writing Skill):

- लेखन, सुन्दर, स्पष्ट एवं सुडौल हो।
- उसमें प्रवाहशीलता एवं क्रमबद्धता हो।
- विषय (शिक्षण) सामग्री उपयुक्त अनुच्छेदों में विभाजित हो।
- भाषा एवं शैली में प्रभावोत्पादकता हो।
- भाषा व्याकरण सम्मत हो।
- अभिव्यक्ति संक्षिप्त, स्पष्ट तथा प्रभावोत्पादक हो।

लेखन शिक्षण की प्रविधियाँ (Techniques of Writing Skill):

🎬 मॉण्टेसरी विधि- मॉण्टेसरी ने लिखना सिखाने में आँख, कान और हाथ तीनों के समुचित प्रयोग पर बल दिया है। उनके मतानुसार, पहले बालक को लकड़ी अथवा गत्ते या प्लास्टिक के बने अक्षरों पर ऊँगली फेरने को कहा जाए, फिर उन्हें पेन्सिल को उन्हीं अक्षरों पर घुमवाना चाहिए। पेन्सिल प्राय: रंगीन होनी चाहिए। इसी प्रकार बालक अक्षरों के स्वरूप से परिचित होकर उन्हें लिखना सीख जाता है।
🎬 रूपरेखानुकरण विधि- इस विधि में शिक्षक श्यामपट्ट या स्लेट पर चाक या पेंसिल से बिंदु रखते हुए शब्द या वाक्य लिख देता है ,और छात्रों से उनके निशाने पर पेंसिल से लिखने के लिए बोलता है, जिससे शब्द, वाक्य, वर्ण उभर आए|इस प्रकार अभ्यास के माध्यम से वह वर्णों को लिखना सीख जाता है|
🎬 स्वतन्त्र अनुकरण विधि – इसमें अध्यापक श्यामपट्ट, कापी या स्लेट पर अक्षरों को लिख देता है और छात्रों को कहता है कि उन अक्षरों को देखकर उनके नीचे स्वयं उसी प्रकार अक्षर बनाए।
🎬 तुलना विधि – हिन्दी भाषी क्षेत्रों में तुलना विधि उपयोगी मानी जाती है। बालक को तीसरी चौथी कक्षा में मातृभाषा के लेखन का अभ्यास हो चुका होता है। अतः उससे तुलना करते हुए हिन्दी भाषा शीघ्रता से सीखी जा सकती है।

[९]

लेखन शिक्षण के लिए आवश्यक बातें(Things Needed for Teaching Writing):

ये बातें निम्नलिखित हैं-

1. बालक को लिखना तभी सिखायें जब वह लिखने में रुचि ले।

2. अक्षरों को सरल से कठिन के क्रम में लिखना सिखाया जाये जैसे-प, व, र, भ आदि अक्षर पहले क्ष, त्र, ज्ञ आदि कठिन अक्षर बाद में। वाक्य भी सरल से कठिन की ओर सूत्र के आधार पर लिखने सिखाये जायें।

3. अध्यापक को चाहिए कि वह बालक के लिखने की गति पर प्रारम्भ में ध्यान न देकर अक्षरों, शब्दों और वाक्यों की शुद्धता पर ध्यान दे।

4. प्रारम्भ में अक्षरों का आकार बड़ा होना चाहिए धीरे-धीरे अक्षरों के आकार छोटे किये जायें।

5. बालक के मन में लिखने के प्रति उदासीनता नहीं होनी चाहिए।

6. लिखना सिखाते समय बालक की व्यक्तिगत् विभिन्नता पर ध्यान देना चाहिए। सभी बालक एक सा नहीं लिख सकते।

7. लेखन कार्य पढ़े हुए अंश से सिखाना चाहिए। बालक पढ़ी हुई बात को आसानी से लिख लेते हैं।

[१०]

हिन्दी भाषा में पढ़ने के कौशल का वर्णन कीजिए।

Answer: पठन का अर्थ :

सामान्यतः लिखित भाषा को बाँचने की क्रिया को पढ़ना या पठन कहा जाता है; जैसे-पम्फलेट पढ़ना, समाचार-पत्र पढ़ना तथा पुस्तकें पढ़ना। लेकिन भाषा शिक्षण के सन्दर्भ में पढ़ने का अर्थ होता है किसी के द्वारा लिखित भाषा के माध्यम से अभिव्यक्त भाव तथा विचारों को पढ़कर समझना। अर्थ बोध तथा भाव की प्रतीति पढ़ने के जरूरी तत्व होते हैं। इस तरह जब हम किसी के द्वारा लिखे किसी लेख, कहानी, निबन्ध, नाटक या पद्य को पढ़कर उसका अर्थ तथा भाव ग्रहण करते हैं तो हमारी इस क्रिया को पढ़ना अथवा पठन कहते हैं; यह बात दूसरी है कि हम उसका अर्थ तथा भाव किस सीमा तक समझते एवं ग्रहण करते हैं।

पठन दो तरह से किया जाता है- मौखिक रूप से तथा मौन रूप से। मौखिक तथा मौन रूप से पठन करने के भी अनेक रूप हैं।

पठन के आवश्यक तत्व तथा आधार -

लिखित भाषा के माध्यम से अभिव्यक्त भाव और विचारों को मौखिक या मौन रूप से पढ़कर समझने के लिए जिन तत्वों की जरूरत होती है उन्हें ही पठन के तत्व तथा आधार कहते हैं। ये तत्व तथा आधार निम्न हैं-

(1) पठनकर्ता की दृश्येन्द्रिय (आँख) कण्ठ, मुख विवर तथा नासिका (नाक)।

(2) पठनकर्ता का लिपि ज्ञान और स्पष्ट अक्षरोच्चारण।

(3) पठनकर्ता का अपना जरूरी शब्द भण्डार, शुद्ध शब्दोच्चारण का अध्यास करना एवं वाक्य तथा विराम चिन्हों का ज्ञान।

(4) पठनकर्ता की तत्परता, पठन में उसकी रुचि तथा अवधान।

(5) पठनकर्ता का धैर्य के साथ पूर्ण मनोयोग से उचित स्वर तथा उचित गति के साथ सस्वर पठन और उचित गति के साथ मौन पठन का अभ्यास।

(6) पठनकर्ता में पठन के साथ अर्थ तथा भाव समझने की क्षमता।

(7) पठनकर्ता में विराम चिन्हों के अनुसार अर्थ तथा भावबोध करने की क्षमता

मौखिक भाव प्रकाशन की प्रकृति :

व्यक्ति अपने हृदय स्थित भावों को संकेतों, ध्वनियों, भाव-भंगिमाओं, क्रियाओं एवं बोली द्वारा व्यक्त करता है। यह बोली व्यवस्थित, परिमार्जित तथा परिवर्द्धित होकर भाषा का रूप ले लेती है। पशु जगत भी अपने भावों को ध्वनियों, संकेत, भाव भंगिमाओं, क्रियाओं तथा बोली। द्वारा व्यक्त करता है, पर उस जगत की बोली उसी समाज द्वारा समझी जाती है तथा उसमें कोई परिमार्जन या परिवर्तन नहीं हुआ है। मनुष्य अब अपने मनोभावों को ज्यादातर भाषा के ही माध्यम से प्रकट करता है, अन्य माध्यमों का प्रयोग कम करता है।

भाषा के माध्यम से किया गया भाव-प्रकाशन या आत्म-प्रकाशन दो रूप लेता है-लिखित या मौखिक। लिखित भाव-प्रकाशन में वह लिखित भाषा के प्रतीकों, भाव-चित्रों का प्रयोग करता है, मौखिक आत्म-प्रकाशन में उच्चारित भाषा का। लिखित भाषा गौण एवं मौखिक भाषा भाव-प्रकाशन की प्रधान माध्यम होती है। मौखिक भाषा का प्रयोग वह पद-पद पर करता है अतएव इसको भाव-प्रकाशन का मुख्य माध्यम माना गया है। उसे इस भाषा को पद-पद पर प्रयोग करने की जरूरत इसलिए भी जरूरी होती है कि वह समाज में रहता है तथा सामाजिक ऽप्राणी होने के नाते उसे समाज के अन्य सदस्यों से सम्पर्क रखना पड़ता है एवं समाज में अपनी स्थिति बनाये रखने के लिए कई क्रिया-कलाप करने पड़ते हैं। इन क्रिया-कलापों में वह अपने भावों, अन्तर्द्वन्द्वों तथा विचारों से दूसरों को परिचित कराना चाहता है एवं दूसरों के भावों, अन्तर्द्वन्द्वों तथा विचारों को जानने का इच्छुक रहता है। इस क्रिया-प्रतिक्रिया में भावों का आदान-प्रदान होता है, एक व्यक्ति दूसरे के सामने अपने भावों का प्रकाशन प्राय: उच्चारित भाषा द्वारा ही करता है। इस तरह मौखिक भाव प्रकाशन में निम्न दो

क्रियाएँ समाज में लगातार चलती रहती हैं-

(1) समाज का हर सदस्य अपने विचारों से एक-दूसरों को अवगत कराते हैं।

(2) उनके विचारों को सुनकर उनके मनोभावों को हृदयंगम कर ग्रहण करते हैं।

मौखिक भाव प्रकाशन के उद्देश्य :

भाव अभिव्यक्ति मनुष्य की सबसे बड़ी जरूरत है। अगर मनुष्य अपने विचारों, भावनाओं,उद्वेगों तथा अन्तर्द्वन्द्वों को प्रकाशित न करे या न कर सके तो वह मानसिक सन्तुलन खो बैठता है।

मौखिक भाव प्रकाशन के उद्देश्य निम्न हैं-

(1) मौखिक भाव प्रकाशन का एक उद्देश्य है**-** भावों के आदान-प्रदान द्वारा उत्तेजित भावनाओं को शान्त कर समाज में शान्ति तथा सन्तुलन बनाये रखना। ऐसे समाज में संगठन तथा ताकत होती है, जिससे उसके सदस्य अपने भावों का आपस में आदान-प्रदान करते रहते हैं।

(2) मौखिक भाव प्रकाशन का दूसरा उद्देश्य है**-** आत्म विज्ञापन। आत्म-प्रकाशन द्वारा व्यक्ति आत्म विज्ञापन करता है, कभी-कभी झूठ का सहारा लेकर अपने संबंध में बढ़ा-चढ़ा कर बातें बनाता है। आत्म-सन्तोष ही आत्म विज्ञापन का परिणाम होता है।

(3) आत्म-प्रकाशन का तीसरा लक्ष्य है**-** व्यक्ति का विकास। जो व्यक्ति निर्भीक होकर अपनी सम्मति या विचार प्रकट कर सकता है, जो अपनी भावनाओं को वाणी द्वारा दूसरों के सामने प्रकट कर, उन्हें अपने वश में कर लेता है। श्रोता उससे इतना प्रभावित हो जाता है कि तुरन्त उसके पक्ष में आ जाता है। लाखों की भीड़ ऐसे कुशल वक्ता की बात एकाग्रचित होकर सुनती है तथा उससे प्रभावित होती है।

शिक्षा तथा मौखिक भाव-प्रकाशन

क्योंकि मौखिक भाव-प्रकाशन व्यक्ति की प्रधान जरूरत है तथा शिक्षा ऐसी सोद्देश्य क्रिया है, जिसके द्वारा शिक्षक की आवश्यकताओं की सन्तुष्टि की जाती है। अतएव शिक्षक को विद्यालय में छात्रों के सामने भाव-प्रकाशन के सभी सम्भव साधन पेश कर, उनके व्यक्तित्व का विकास करना चाहिए।

मौखिक आत्माभिव्यक्ति के विशिष्ट उद्देश्य

(1) बालकों में स्वाभाविक रूप से शुद्ध,प्रवाहपूर्ण तथा प्रभावोत्पादक ढंग से वार्तालाप करने की योग्यता विकसित करना, ताकि वे अपने मनोभावों को आसानी से दूसरों के सामने प्रकट कर सकें।

(2) छात्रों में क्रमिक रूप से लगातार बोलते जाने की क्षमता पैदा करना।

(3) छात्रों में मधुर तथा रोचक भाषण देने की शक्ति विकसित करना।

(4) छात्रों में संकोच, झिझक तथा आत्महीनता की भावना को दूर करना।

मौखिक आत्माभिव्यक्ति के शिक्षण में अपेक्षित व्यवहारगत परिवर्तन

अगर शिक्षक इन उद्देश्यों की पूर्ति करना चाहता है तो छात्रों में निम्न परिवर्तन अपेक्षित हैं-

(1) छात्र शुद्ध उच्चारण, उचित स्वराघात, स्वरों के उपयुक्त उतार-चढ़ाव के साथ भावों का प्रकाशन कर सकता है।

(2) वह प्रसंगानुसार उचित गति के साथ अपने विचारों को मौखिक ढंग से कह सकता है।

(3) वह प्रसंगानुकूल मुहावरों, लोकोक्तियों, कहावतों, सूक्तियों का प्रयोग कर सकता है।

(4) वह शब्दों, वाक्यांशों, उपवाक्यों का क्रम अर्थ के अनुसार रख सकता है।

(5) वह विचारों में क्रमबद्धता, सुसम्बद्धता बनाये रख सकता है।

(6) वह उचित हाव-भाव, में भाव-भंगिमाओं के साथ बोल सकता है।

(7) वह जरूरत पड़ने पर अपनी बात की पुनरावृत्ति कर सकता है।

(8) वह वार्तालाप में जरूरी शिष्टाचार का पालन कर सकता है।

(9) वह प्रसंग के अनुकूल शैली का प्रयोग कर सकता है।

मौखिक भाव-प्रकाशन के अवसर, विकास की युक्तियाँ तथा उपयोगिता :

मौखिक अभिव्यक्ति में अध्यापक का सहयोग- मौखिक आत्म-प्रकाशन की शिक्षा हेतु अध्यापक कई तरह से प्रयास कर सकता है। उसका उद्देश्य यही रहता है कि छात्रों में ऐसी योग्यता पैदा हो जाए कि वे सरलता तथा स्पष्टता के साथ अपने मनोभावों को दूसरे के सामने प्रकट कर सकें, बोलने में संकोच, झिझक तथा 'आत्महीनता' की भावनाओं का लोप हो जाए एवं सस्वर वाणी द्वारा गति के साथ स्वर को उतार-चढ़ाव देते हुए विचारों को क्रमबद्ध तरीके से प्रकट कर सकें। इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु शिक्षक निम्न प्रयत्न करता है-

(1) कक्षा में वार्तालाप का आयोजन,

(2) कहानी कथन,

(3) चित्र पठन्,

(4) गीत तथा कविता पाठ,

(5) अभिनय क्रियाएँ,

(6) खेल क्रियाएँ,

(7) समवेत वाचन,

(8) पेनल चर्चा,

(9) परिसंवाद।

1. कक्षा में वार्तालाप का आयोजन- शिक्षक वार्तालाप का प्रयोग दो तरह से करता है। वह दूसरे छात्रों को आपस में बातचीत करने की प्रेरणा देता है।

वार्तालाप शिक्षक तथा छात्र या दो या दो से ज्यादा छात्रों के बीच आयोजित किया जा सकता है। वार्तालाप का समय दैनिक चर्या में पहले से निश्चित किया जा सकता है। छात्रों को अपने साथ उस वस्तु को कक्षा में लाने की छूट दे दी जाती है, जिसको वार्तालाप का केन्द्र बनाया जाता है। शिक्षक वार्तालाप के मध्य उपस्थित रहता है, पर किसी तरह की रोक-टोक नहीं करता। नितान्त त्रुटिपूर्ण भाषा पर भी वह वार्तालाप के मध्य किसी पर आक्षेप नहीं करता। वार्तालाप स्वाभाविक गति से चलता

रहता है। त्रुटियों का संशोधन, उच्चारण की अशुद्धियों की जानकारी छात्र को बाद में दी जाती है।

2. कहानी कथन**-** छात्रों को कहानियों से बड़ा लगाव होता है। वे कहानी सुनना चाहते हैं, कहना भी चाहते हैं, भले ही उनकी भाषा टूटी-फूटी ही क्यों न हो। वे किसी साथी से या अपने गुरुजी से कहानी सुनने के लिए लालायित रहते हैं, पर अपने परिचित व्यक्ति को वे कहानी सुनाना भी चाहते हैं। आत्माभिव्यक्ति के साधनों में कहानी कथन का विशेष स्थान है। शिक्षक को अपने बच्चों को लगातार प्रेरणा देते रहना चाहिए कि वे कहानी कथन में रुचि लें। यह कार्य निम्न विधियों से किया जा सकता है-

(1) सुनी या पढ़ी हुई कहानी को, कहानी का आरम्भ बताकर दुहराने का आदेश देना।

(2) पढ़ी अथवा सुनी कहानी का अन्त बताकर उसके कहने के लिए आदेश देना।

(3) कही गई या पढ़ी हुई कहानी के अनुरूप किसी दूसरी कहानी को सुनाने का आदेश देना।

(4) ऊँची कक्षाओं में कहानी की रूपरेखा देकर कहानी की पूर्ति कराना।

कक्षा 8 से लेकर कक्षा 10 तक कहानी कथन मौखिक अभिव्यक्ति का सबसे रोचक साधन है। पर कहानी का चुनाव श्रोताओं की आयु, उनके विकास स्तर, ज्ञान एवं जीवन के प्रति दृष्टिकोण पर निर्भर होगा।

3. चित्र पठन**-** मौखिक प्रकाशन का अभ्यास देने के लिए छात्रों को चित्र दिखाये जाते हैं। चित्रों का वर्णन कराया जाता है, चित्रों पर आधारित प्रश्न पूछे जाते हैं। कहानी के कुछ भाग को पूरा करने हेतु चित्रों का प्रयोग किया जाता है पर चित्रों की विशेषताएँ, कक्षा के स्तर के अनुकूल होती हैं। प्राथमिक कक्षाओं में चित्र किसी कहानी पर आधारित होने चाहिए। चित्र में एक-दो चीज ही दिखाई जानी चाहिए। एक चित्र में एक से ज्यादा घटना का समावेश न किया जाय। प्राइमरी कक्षाओं के लिए जरूरी चित्र अंकित होने चाहिए।

4. गीत तथा कविता पाठ**-** संगीत में छात्रों की स्वाभाविक रुचि होती है। उनको गेय रचनाओं को याद करने तथा पढ़ने में रुचि होती है। छोटे बच्चे क्रियात्मक गीतों में विशेष रुचि लेते हैं।

दूसरी रुचि होती है**-** सामूहिक गायन तथा अन्तयाक्षरी प्रतियोगिता की। शिक्षक को बालकों की इन रुचियों का भावाभिव्यक्ति के शिक्षण में प्रयोग करना चाहिए। उसे बच्चों को शुद्ध गायन हेतु प्रेरित करना चाहिए। छोटी-छोटी गायन प्रतियोगिताओं का विद्यालय में आयोजन किया जा सकता है।

5. अभिनय क्रिया**-** सभी स्तर के छात्र अभिनय करने में आनन्द लेते हैं। खेल में वे किसी के बोलने-चालने, उठने-बैठने की नकल करने में आनन्द लेते हैं। खेल खेलने में वे दैनिक जीवन के कृत्यों का अभिनय करते ही रहते हैं। शिक्षक उन्हें अभिनय करने के कई अवसर दे सकता। हिन्दी की पाठ्य-पुस्तक में अगर कोई एकांकी नाटक है तो उसका अभिनय कराया जा सकता है। अभिनय में किया जाने वाले वाद-विवाद से भी मौखिक अभिव्यक्ति का अच्छा अभ्यास होता है।

6. खेल की क्रियाएँ**-** छात्र हास्य, इण्टरव्यू, चुटकुले, हास्य नाटिकाओं में भी बड़ी ही रुचि लेते हैं। शिक्षक को उनको ऐसे अवसर जरूर देने चाहिए, जहाँ वे अपने भावों का प्रकाशन कर सकें।

7. समवेत वाचन**-** प्रारम्भिक कक्षाओं में क्लिष्ट शब्दों का उच्चारण करने हेतु समवेत वाचन का

सहारा लिया जा सकता है। सभी बच्चे क्लिष्ट शब्द का एक साथ उच्चारण करते हैं। संकोची छात्र अपनी झिझक दूर कर लेता है। कर्कश स्वर वाले छात्र या आत्म-विश्वास की कमी वाले छात्र समवेत वाचन से लाभान्वित होते हैं, पर शिक्षकों को समवेत वाचन कराते समय निम्न बातों का ध्यान रखना चाहिए-

(1) छात्रों की संख्या ज्यादा न हो।

(2) पड़ौस की कक्षा की शान्ति भंग न हो।

(3) 13-14 वर्ष की आयु से ज्यादा आयु वाले छात्रों को समवेत वाचन में यथाशक्ति कम स्थान दिया जाय।

8. पैनल चर्चा**-** भावाभिव्यक्ति का यह तरीका ऊँची कक्षा के छात्रों हेतु है। सामूहिक विचार-विमर्श में 4-5 छात्र स्टेज पर आसन ग्रहण करते हैं। एक छात्र प्रश्न पूछता है, समूह में से कोई भी छात्र उस प्रश्न का उत्तर देता है। इस प्रकार सारा समूह किसी समस्या पर विचार-विमर्श करता है। समूह की विवेचना के पश्चात सम्पूर्ण कक्षा या उपस्थित श्रोता उसी समस्या पर पुनः अपने विचार प्रकट करने लगते हैं। इसी प्रकार पैनल चर्चा, वाद-विवाद प्रतियोगिताओं से ज्यादा उपयोगी होती है।

9. परिसंवाद- समाज में अपना प्रभुत्व बनाने हेतु विचारों को प्रभावशाली ढंग से पेश करने की विधा का नाम ही परिसंवाद है। जनतन्त्रात्मक समाज में भाषण कला का बड़ा सम्मान होता है। बालकों में बोलने के प्रति रुचि एवं साहस जगाने का प्रयत्न प्रारम्भिक कक्षाओं में ही होना चाहिए। परिसंवाद में विचार प्रवाह, शैली एवं शब्दों का चुनाव बहुत महत्वपूर्ण होता है। कभी-कभी विद्वान तथा अध्ययनशील वक्ता भी समाज को प्रभावित नहीं कर पाता, जिसके पास शब्द एवं भाव तो होते हैं लेकिन शैली नहीं होती। परिसंवाद पूर्णत: एक कला है। शाला में विभिन्न साहित्यिक तथा सांस्कृतिक कार्यक्रमों के माध्यम से बालकों में परिसंवाद के प्रति रुचि जगाई जा सकती है। परिसंवाद में सन्दर्भ तथा संस्मरणों का उपयोग प्रभावशाली तत्वों के रूप में होता है। बालकों को इस बात की जानकारी दी जानी चाहिए कि वे परिसंवाद में उस स्थिति को बनायें, जिससे उनकी तात्कालिक बुद्धि का परिचय मिले। शालाओं में तात्कालिक परिसंवाद प्रतियोगिताओं के आयोजन से उक्त अभ्यास कराया जा सकता है।

वाचन की प्रकृति **:**

साधारणतया अंग्रेजी के Reading शब्द के लिए हिन्दी में दो शब्दों का प्रयोग होता है। वे दो शब्द हैं- वाचन तथा पठन। मूलतः इन दोनों क्रियाओं में थोड़ा अन्तर है। पठन का अर्थ व्यापक है तथा वाचन का अर्थ है, जोर-जोर से पढ़ना, जिसका आनन्द श्रोता भी ले सकें।

वाचन के दो मुख्य आधार हैं**-**

1. वाचन मुद्रा**-** वाचन मुद्रा से हमारा आशय बैठने, खड़े होने, वाचन सामग्री को हाथ में पकड़ने एवं भावों के अनुकूल आँखों, हाथों तथा अंगों का संचालन करने से है।

2. वाचन शैली- वाचन शैली से हमारा तात्पर्य कंठ साधकर भाव के अनुसार उचित उतार-चढ़ाव के साथ पढ़ने के ढंग से है।

उचित वाचन मुद्रा का के साथ जो व्यक्ति वाचन सामग्री का भावों के अनुसार अंगों संचालन करते हुए

पढ़ता है, वह श्रोताओं को बरबस अपनी तरफ आकृष्ट कर लेता है। अच्छा वाचनकार आगे चलकर अच्छा वार्ताकार, प्रभावशाली वक्ता तथा सफल अभिनेता हो जाता है।

अच्छे वाचन की विशेषताएँ- एक सुरुचिपूर्ण तथा सुन्दर वाचन में निम्न विशेषताएँ होनी चाहिए-

(1) अच्छा वाचन आरोह-अवरोह के साथ प्रभावोत्पादक ढंग से किया जाता है।

(2) हर शब्द को अन्य शब्दों से अलग करके उचित बल तथा विराम के साथ पढ़ना, अच्छे वाचन का दूसरा गुण है।

(3) वाचक अपने वाचन में आवश्यकतानुसार भाव-भंगिमाओं का प्रदर्शन करता है।

(4) वह वाचन में सुस्वरता के साथ प्रवाह बनाये रखता है। अत्यन्त सुन्दर शैली में लिखी हुई वाचन प्रणाली साधारण पाठक के मुख से निकलकर नीरस तथा निरर्थक प्रतीत होती है, इसके विपरीत साधारण-सी वाचन सामग्री को भी एक अच्छा वाचक प्रभावोत्पादक ढंग से पेश कर श्रोताओं का मन मोह लेता है।

वाचन शिक्षण के उद्देश्य **:**

वाचन का शुद्ध तथा प्रभावोत्पादक होना जरूरी है। वाचक के वाचन में शुद्धता तथा प्रभावोत्पादकता सही वाचन शिक्षण द्वारा ही आती है। वाचन शिक्षण करते समय शिक्षक को निम्न उद्देश्यों को ध्यान में रखना चाहिए-

(1) बालकों के अक्षरोच्चारण, शब्दोच्चारण शुद्ध होने चाहिए। वे वाचन सामग्री को उचित, निर्गम, बल, सुस्वरता के साथ पढ़ सकें।

(2) उनके स्वरों में ऐसा आरोह-अवरोह हो कि भावों के अनुकूल उनमें लोच हो।

(3) वाचन इतना प्रभावोत्पादक हो कि श्रोता का मन मुग्ध हो जाय।

(4) बालक वाचन सामग्री का भाव समझ सके तथा दूसरों को समझा भी सके।

वाचन के प्रकार **:**

मुख्यतः वाचन दो तरह का होता है-

1. सस्वर वाचन **-**

सस्वर का अर्थ है जोर से या स्वर सहित वाचन करना। कई अनौपचारिक अवसरों पर व्याख्यान देते समय, वाद-विवाद तथा गोष्ठियों में अपनी बात को प्रभावशाली ढंग से कहने के लिए यही वाचन का रूप प्रयुक्त होता है। शुद्ध, प्रभावपूर्ण वाचन श्रोताओं पर विशिष्ट प्रभाव डालता है। यही नहीं वरन वक्ता का अपना व्यक्तित्व भी निखर उठता है। किसी भी अवसर पर बातचीत करते समय जिसका वाचन अच्छा है अन्य की अपेक्षा दूसरों को शीघ्र प्रभावित कर लेता है।

सस्वर वाचन के उद्देश्य

वाचन पर अगर बचपन से ही माता-पिता तथा शिक्षकों द्वारा ध्यान दिया जाय तो वह प्रभावी एवं त्रुटि रहित हो सकता है। अच्छे वाचन हेतु निम्न बातें जरूरी हैं-

(1) बालक को वाचन के पढ़ते समय बार-बार बीच में न टोकें। इससे वाचन में प्रवाह नहीं आ पाता तथा उसमें आत्म-विश्वास नहीं पनप पाता।

(2) सस्वर वाचन में बड़ी कुशलता की जरूरत है। उच्चारण में भावानुकूल उतार-चढ़ाव, शुद्धता अपेक्षित है।

सस्वर वाचन के निम्न उद्देश्यों पर अध्यापक की दृष्टि रहनी चाहिए-

(1) शुद्ध तथा स्पष्ट उच्चारण के साथ पढ़ना, प्रायः छात्र श तथा स के, क्ष एवं छ के उच्चारण में भेद नहीं कर पाते। बहुत से शिक्षक तक सकुन्तला, सवीकार तथा अच्छर बोलते देखे जा सकते हैं।

(2) विराम चिन्हों पर विशेष ध्यान देते हुए पढ़ना।

(3) भावानुकूल उतार-चढ़ाव के साथ पढ़ना।

(4) श्रोताओं की संख्या के अनुसार अपने स्वर को तीव्र तथा मन्द रूप से पढ़ना।

(5) उच्चारण पर स्थानीय प्रभाव तथा ग्रामीण प्रभाव न पड़ने देना।

अच्छे वाचन के गुण

अच्छे वाचन के निम्न गुण होने चाहिए-

(1) शुद्ध ध्वनियों का ज्ञान।

(2) उच्चारण का शुद्ध अभ्यास।

(3) सही शब्दों पर बलाघात- किस शब्द पर कितना जोर दिया जाना है, इस बात का ज्ञान जरूरी है।

(4) स्वर की स्पष्टता-बहुत से लोग शब्दों को चबा-चबा कर बोलते हैं या बहुतों के मुख से शब्द गिरते-निकलते पड़ते हैं। जो इस तरह का वाचन करते हैं उनका प्रारम्भ से ही वाचन नियन्त्रित किया जाना चाहिए।

(5) उचित विराम चिन्हों का प्रयोग।

(6) भाषा में प्रवाह तथा गति पर पूर्ण ध्यान रखा जाए। न तो बहुत शीघ्रता से तथा न रुक-रुककर धीरे-धीरे पढ़ा जाय।

(7) स्वर में रसात्मकता हो। कर्कशता से पढ़े शब्दों को श्रोता बिल्कुल पसन्द नहीं करता

(8) वाचन करते समय आनन्द की अनुभूति जरूरी है। जब वक्ता ही रुचि नहीं लेगा तो श्रोता कैसे रुचि ले सकता है।

(9) वाचन में मुद्रा का अपना विशेष महत्व है। अनावश्यक अंग संचालन से बचना चाहिए। अकारण आँखें झपकाना, उँगलियाँ चबाना, जमीन कुरेदना, आत्म-विश्वासहीनता का परिचायक है। पढ़ते समय पुस्तक को भी उचित तरह से पकड़ना चाहिए। कहने का तात्पर्य यह है कि वाचन हमेशा स्वाभाविक ढंग से किया जाना चाहिए, न कि घबड़ाते हुए और न अकड़ते हुए।

2. मौन वाचन **:**

लिखित सामग्री को मन ही मन बिना स्वर किये चुपचाप पढ़ना मौन वाचन कहलाता है। इसमें ओष्ट नहीं हिलते, ना ही पढ़ने में आवाज आती है। जब बालक मौन वाचन में कुशलता प्राप्त कर लेता है तो सस्वर वाचन छोड़ देता है। मौन वाचन में निपुणता वैचारिक प्रौढ़ता तथा भाषायी दक्षता का सूचक है। मौन वाचन का जीवन में बड़ा महत्व है, जैसे-

(1) मौन वाचन में थकान कम होती है। वाग्यंत्रों पर बहुत जोर नहीं पड़ता।

(2) दूसरों को व्यवधान नहीं पहुंचता।

(3) समय की बचत होती है।

(4) दैनिक जीवन में इसका बहुत महत्व है- अखबार पढ़ने, साहित्य पढ़ने, यात्रा के समय पत्र-पत्रिकाएँ पढ़ने में इसी वाचन का उपयोग किया जाता है।

(5) बालक का ध्यान केन्द्रित रहता है।

(6) मौन वाचन के समय चिन्तन प्रक्रिया चलती रहती है इसलिए पाठ को बालक समझते हुए पढ़ता चला जाता है।

(7) सामूहिक वाचन हेतु मौन वाचन बहुत जरूरी है।

(8) मौन वाचन से स्वाध्याय की आदत पड़ जाती है। आनन्द प्राप्त करने हेतु मौन रूप से पढ़ना नितान्त जरूरी है।

(9) उच्च कक्षाओं में मौन वाचन करना ज्यादा हितकर है।

मौन वाचन के समय कक्षा के शिक्षक को बहुत सतर्क रहना चाहिए। वह देखे कि छात्र मौन रूप से बगैर होठ हिलाये नेत्रों से चुपचाप समझते हुए पढ़ रहा है या नहीं। कहीं स्वर में फुसफुसाहट अथवा ध्वनि तो नहीं आ रही है, शब्दों पर उँगली तो नहीं फेरी जा रही है।

मौन वाचन के उद्देश्य :

मौन वाचन का मुख्य उद्देश्य है, वाचन गति का विकास तथा पठित सामग्री का अर्थ ग्रहण। माध्यमिक स्तर तक आते-आते छात्र के विचारों में परिपक्वता आने लगती है। अत: इस स्तर पर मौन वाचन द्वारा निम्न उद्देश्यों की प्राप्ति की योग्यता विकसित होनी चाहिए-

(1) अनावश्यक स्थलों को छोड़ते हुए प्रमुख भावों या केनद्रीय भाव का अर्थ ग्रहण करते हुए वाचन करना।

(2) पठित सामग्री से तथ्यों, भावों तथा विचारों को ग्रहण करते हुए सारांश बताने की क्षमता का विकास।

(3) पढ़ी हुई सामग्री से प्रश्नों का सही उत्तर दे सकना।

(4) उपयुक्त शीर्षक चयन करने की क्षमता का विकास कर सकना।

(5) भाषा तथा भाव संबंधी कठिनाइयों का चयन कर प्रसंग के अनुकूल नवीन शब्दों, उक्तियों और मुहावरों तथा लोकोक्तियों का अर्थ निकाल लेना।

(6) सन्धि विच्छेद, उपसर्ग, प्रत्यय तथा शब्द धातुओं से शब्द का अर्थ निकाल लेना।

(7) शब्दकोष को देखने तथा प्रसंगानुसार अर्थ निकालने की क्षमता का विकास।

(8) शब्द का लक्षणार्थ जान लेना।

(9) विभिन्न साहित्यिक विधाओं जैसे-नाटक, निबन्ध, कहानी, उपन्यास, जीवनी, संस्मरण आदि के मुख्य तत्वों की पहचान कर लेना। शैली के अनुसार निबन्धों का भेद कर लेना।

(10) लेखक के व्यक्तित्व की विशेषता उसकी शैली है, जो उसकी पहचान भी है।

विद्यालय में हिन्दी शिक्षक द्वारा सस्वर वाचन तथा मौन वाचन के अवसर :

गद्य तथा पद्य के पाठों में सस्वर वाचन का महत्वपूर्ण स्थान है। प्राथमिक तथा माध्यमिक कक्षाओं में गद्य की पाठ्य-पुस्तकें अलग नहीं होतीं, पर मौन वाचन का प्रशिक्षण सिर्फ गद्य पाठों द्वारा दिया जा सकता है। माध्यमिक तथा उच्च स्तर पर सहायक पुस्तकें अलग रहती हैं। इन पुस्तकों को पढ़ाते समय द्रुत मौन वाचन का अभ्यास कराने में आसानी रहती है पढ़ाते समय मौन वाचन नहीं किया जाता, क्योंकि पद्य का उद्देश्य है, रसानुभूति कराना।

शिक्षण में पहले शिक्षक द्वारा आदर्श सस्वर वाचन किया जाता है, तदन्तर छात्र अनुकरण वाचन करते हैं। कुठिन शब्दों की व्याख्या के पश्चात् ही मौन वाचन से आसानी से अर्थ ग्रहण किया जा सकता है। मौन वाचन से पहले कुछ प्रश्न भी श्यामपट्ट पर लिखे जा सकते हैं, जिनका उत्तर मौन वाचन करने के बाद छात्रों से लिये जा सकते हैं। इसी दृष्टि से छात्र मौन वाचन करके उत्तर देने के लिए पहले से तैयार रहेंगे तथा उनका वाचन भी किसी उद्देश्य की प्राप्ति में सहायक होगा।

पठन कौशल का विकास :

किसी भी कौशल का विकास करने हेतु सबसे ज्यादा जरूरत अभ्यास की होती है। हम बच्चों को पठन के जितने ज्यादा अवसर प्रदान करेंगे वे पठन कौशल में उतने ही ज्यादा निपुण होंगे। लेकिन यह कार्य एक-दो दिन, माह या वर्षों में पूरा नहीं किया जा सकता। इसके लिए शिक्षा के हर स्तर पर सतत् प्रयत्न करना जरूरी होता है। पठन कौशल के विकास का अर्थ है-बच्चों में पठन कौशल के जरूरी तत्वों का विकास करना। जहाँ तक पठन कौशल के विकास का प्रश्न है, यह कार्य विद्यालयों में ही प्रारंभ किया जाता है। प्रारम्भ बच्चों को अक्षरों का उच्चारण तथा लेखन एक साथ सिखाया जाता है, उसके बाद उन्हें दो-दो, तीन-तीन अक्षरों से बने शब्दों का उच्चारण करने तथा उन्हें लिखने का अभ्यास कराया जाता है एवं उसके बाद पढ़ने या पठन कौशल का विकास किया जाता है। इस तरह पठन कौशल के विकास हेतु भिन्न-भिन्न स्तरों पर भिन्न-भिन्न कार्य करने होते हैं।

पूर्व प्राथमिक स्तर तथा पठन कौशल का विकास :

पूर्व प्राथमिक स्तर पर सिर्फ सुनने तथा बोलने के कौशलों का विकास किया जाता है। यह बात दूसरी है कि उस प्रयास में शिशु कई शब्दों से परिचित हो जाते हैं तथा उनका सही रूप से उच्चारण करने लगते हैं एवं ये दोनों पठन के जरूरी तत्व हैं।

प्राथमिक स्तर तथा पठन कौशल का विकास :

प्राथमिक स्तर की प्रथम कक्षा में बच्चों को सिर्फ अक्षरों का उच्चारण तथा लेखन एवं दो-दो, तीन-तीन अक्षरों से बने शब्दों का उच्चारण तथा लेखन सिखाया जाता है। इसके बाद उन्हें छोटे-छोटे वाक्यों का पढ़ना-लिखना सिखाया जाता है। यह सब पठन की कोटि में तो नहीं आता लेकिन इस प्रयत्न में पठन के जरूरी तत्व-शब्द ज्ञान तथा शुद्ध उच्चारण का अभ्यास अवश्य हो जाता है।

जहाँ तक मौखिक रूप से शिक्षा की पठन की बात है इसकी शुरुआत कक्षा 2 में की जाती है। कुछ विद्वान कक्षा 3 से मौन पठन की शिक्षा शुरू करने की बात भी करते हैं। कक्षा 2 से कक्षा 5 तक के बच्चों में पठन कौशल का विकास करने के लिए निम्न उपाय किये जाने चाहिए-

(1) बच्चों को बाल पुस्तकें पढ़ने के अवसर दिए जाएँ।

(2) बच्चों को बाल गीत पढ़ने के अवसर दिए जाएँ।

(3) बच्चों को पाठ्य पुस्तकों के पाठ पढ़ाते समय अनुकरण पठन तथा मौन पठन के अवसर दिए जाएँ।

(4) बच्चों को समाचार पत्र पढ़ने के अवसर दिए जाएँ।

(5) बच्चों को घर पर पढ़ने के लिए सामग्री दी जाए।

बच्चे धैर्य के साथ पूर्ण मनोयोग से पठन करें इसके लिए जरूरी है कि-

(1) बच्चों को पठन तन्त्र-आँख, कण्ठ, मुख विवर तथा नाक ठीक हो। इनमें से किसी में भी विकास होने पर उसका उपचार कराया जाए।

(2) बच्चों के बैठने तथा खड़े होने के आसन ठीक हों, रीढ़ की हड्डी सीधी रहे। इसके लिए जरूरी है कि उनके लिए उपयुक्त फर्नीचर हो एवं अध्यापक उनके आसनों को उचित दिशा दें।

(3) बच्चे पठन के लिए तत्पर हों, पठन में उनकी रुचि तथा अवधान हो। इसके लिए जरूरी है कि अध्यापक बच्चों को अभिप्रेरित करें।

(4) बच्चों को अक्षरों का ज्ञान हो, वे स्पष्ट अक्षरोच्चारण करें। साथ ही उन्हें जरूरी शब्द ज्ञान हो, वे उनका शुद्ध उच्चारण करें।

(5) बच्चों को विराम चिन्हों का स्पष्ट ज्ञान हो, वे विराम चिन्हों के अनुसार अर्थ तथा भाव ग्रहण करें।

(6) बच्चे उचित स्वर तथा उचित गति में हाव-भाव के साथ मौखिक पठन करें।

(7) बच्चों की अशुद्धियों को साथ-साथ दूर किया जाए। इसके लिए उन्हें बीच में न टोका जाए, पठन के बाद प्रदर्शन तथा निर्देशन द्वारा यथा अशुद्धियों को दूर किया जाए। उनके मौखिक पठन को टेपरिकार्डर में टेप करके उन्हें सुनाया जाए, वे उसके गुण-दोष स्वयं देखें तथा सुधार करें।

(8) पठन के बाद 2-4 प्रश्न पूछ कर पठन के प्रभाव का मूल्यांकन किया जाए। सही उत्तर देने वालों की सीमित प्रशंसा की जाए।

(9) बच्चों के साथ प्रेम तथा सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार किया जाए।

उच्च प्राथमिक स्तर तथा लेखन कौशल का विकास -

इस स्तर तक आते-आते बच्चों का शब्द ज्ञान थोड़ा विस्तृत हो जाता है तथा वे सुनने, वे बोलने, पढ़ने एवं लिखने के कौशलों में भी थोड़े निपुण हो चुके होते हैं। अपने सही अर्थों में उनके पठन कौशल में विकास इसी स्तर से प्रारंभ होता है। इस स्तर पर बच्चों को मौन पठन है में भी निपुण किया जाता है। लेकिन इस स्तर पर बच्चों को तीन भाषाएँ सीखनी होती हैं अतः इस सबके लिए समय अपेक्षाकृत कम मिलता है। इस स्तर पर पठन कौशल के विकास हेतु निम्न उपाय किये जाने चाहिये-

(1) बच्चों को पाठ्य पुस्तकों के गद्य पाठों के शिक्षण के समय यथा गद्यांशों के मौखिक तथा मौन पठन के अवसर दिए जाएँ।

(2) बच्चों को पाठ्य-पुस्तकों में संग्रहीत कविताओं को पढ़ाते समय मौखिक पठन के अवसर दिए जाएँ।

(3) बच्चों को द्रुत पठन की पुस्तकों को मौन रूप से पढ़ने के अवसर दिए जाएँ।

(4) बच्चों को पुस्तकालयों से संदर्भित पुस्तकें लेने, उनका पठन करने तथा उनमें से जरूरी सामग्री की खोज करने के अवसर दिए जाएँ।

बच्चे धैर्य के साथ पूर्ण मनोयोग से उचित रूप में मौखिक या मौन पठन करें, इसके लिए जरूरी है कि-

(1) बच्चों का पठन तन्त्र ठीक हो, उसमें कोई विकार होने पर उसका उपचार कराया जाए।

(2) उनके बैठने व खड़े होने के आसन ठीक हों। इसके लिए जरूरी है कि उनके बैठने का फर्नीचर ठीक हो तथा अध्यापक उनके आसनों को उचित दिशा दें।

(3) बच्चों की पठन में रुचि हो। अध्यापक उन्हें अभिप्रेरित करें।

(4) बच्चे स्पष्ट अक्षरोच्चारण करें। अध्यापक इस तरफ ध्यान दें।

(5) बच्चे शुद्ध शब्दोच्चारण करें। अध्यापक लगातार सुधार करें।

(6) बच्चे उचित ध्वनि निर्गम, उचित स्वर, उचित गति तथा उचित हाव-भाव के साथ पठन करें। अध्यापक आदर्श पठन, प्रदर्शन तथा निर्देशन आदि विधियों द्वारा यथा सुधार करें।

(7) जब बच्चे पठन कर चुकें तब उनसे 2-4 प्रश्न पूछे जाएँ, पठन के प्रभाव का मूल्यांकन किया जाए।

(8) सही उत्तर देने वालों की सीमित प्रशंसा की जाए। उत्तर न देने वालों को सचेत किया जाए।

(9) बच्चों के साथ प्रेम तथा सहानुभूतिपूर्वक व्यवहार किया जाए।

माध्यमिक स्तर तथा पठन कौशल का विकास :

माध्यमिक स्तर तक आते-आते बच्चों का शब्द भण्डार और ज्यादा विस्तृत हो जाता है एवं उनके अनुभव भी बढ़ जाते हैं। इस स्तर पर पठन कौशल का सही अर्थों में विकास किया जा सकता है। इसके लिए अध्यापकों को वही उपाय करने चाहिए जो पूर्व माध्यमिक स्तर पर करने का सुझाव दिया है तथा वहीं सावधानियाँ बरतनी चाहिए जिन्हें पूर्व माध्यमिक स्तर पर बरतने का सुझाव दिया जाता है। बस स्तर को थोड़ा उठाना होगा।

इस स्तर तक आते-आते बच्चों को भाषा के व्याकरण का भी कुछ ज्ञान हो जाता है, वे विराम चिन्हों के अनुसार अर्थबोध भी करने लगते हैं। साथ ही उनका वैचारिक स्तर भी उठ जाता है। अतः इस स्तर पर कक्षा कार्य के साथ-साथ पुस्तकालय तथा वाचनालय का प्रयोग होना चाहिए। बच्चों को वाचनालय में बैठकर पत्र-पत्रिकाओं के पठन के अवसर प्रदान किए जाने चाहिए तथा पुस्तकालय से सामान्य और सन्दर्भित पुस्तकें लेकर उनके पठन के अवसर देने चाहिए। कक्षा में कभी-कभी इस सब पर चर्चा होनी चाहिए, तभी तो पता चलेगा कि बच्चे वाचनालय तथा पुस्तकालय से कितने लाभान्वित हो रहे हैं।

श्रवण कौशल का अर्थ, उद्देश्य, महत्व

By: Kailash meena   Last Updated: 11/10/2021 in: Other Education,

श्रवण कौशल का अर्थ (shravan kaushal kya hai)

श्रवण कौशल से आशय सही ढंग से सुनने की क्षमता हैं। 'श्रवण' शब्द 'श्रु' धातु से बना है जिसका शाब्दिक अर्थ है सुनने की क्रिया, ध्यानपूर्वक सुनना, अध्ययन करना, अधिगम/सीखना करना आदि। कौशल का अर्थ हैं ठीक तरह के काम करने की योग्यता, दक्षता या समर्थता।

बालक ध्वनियों को सुनते हैं और सुनकर अनुकरण करते हैं। श्रवण कौशल का विकास धीर-धीर होता हैं। श्रवण कौशल के विकास के लिये बच्चों में प्रारंभ से ही सभी ध्वनियों को सुनकर उनमें विभेद करने का सामर्थ्य विकसित करना चाहिए। छात्रों में ध्यानपूर्वक सुनने की योग्यता का विकास किया जाना चाहिए। उनके समक्ष शिक्षक को आदर्श ध्वनियों का उच्चारण करना चाहिए। छात्रों में श्रोता के शिष्टाचार का पालन करने की आदत डालनी चाहिए। साथ ही छात्रों द्वारा निर्देशों को सुनकर उनका पालन कर सकते की योग्यता विकसित करना आवश्यक हैं। कहानियों, कविताओं, चुटकुले, वर्णन-वार्ताओं आदि सुनकर ज्ञानवृद्धि करने तथा मनोरंजन कर सकने की क्षमता का विकास श्रवण से ही संभव होगा। छात्रों में वक्ता के स्वर के कथन, प्रश्न, आश्चर्य, झिड़की आदि भावों को पहचान सकने की क्षमता भी विकसित होनी चाहिए तभी उसका श्रवण कौशल समुचित रूप से विकसित हो सकेगा। श्रवण कौशल के विकास एवं परिपक्वता की दृष्टि से व्यतिरेकी ध्वनियों को छात्रों द्वारा पहचानना नितान्त आवश्यक हैं।

श्रवण कौशल के उद्देश्य (shravan kaushal ke uddeshy)

श्रवण कौशल के निम्नलिखित उद्देश्य हैं--

1. छात्रों में श्रवण के प्रति रूचि उत्पन्न करना जिससे वे दूसरों की बातों को ध्यानपूर्वक सुन सकें।

2. छात्रों में सुनकर अर्थ ग्रहण करने की योग्यता विकसित करना।

3. दूसरों के द्वारा उच्चारित शब्दों को सुनकर शुद्ध उच्चारण करने की योग्य बनाना।

4. श्रुत सामग्री के महत्वपूर्ण अंशों को पहचानने की योग्यता विकसित करना।

5. श्रुत सामग्री के महत्वपूर्ण, आकर्षक, मर्मस्पर्शी विचारों तथा भावों का चयन करने की योग्यता विकसित करना।

6. वक्ता के मनोभावों को समझने योग्य बनाना।

7. श्रुत सामग्री का सारांश ग्रहण करने की योग्यता विकसित करना।

8. भाषा एवं साहित्य के प्रति रूचि उत्पन्न करना।

श्रवण कौशल का महत्व (shravan kaushal ka mahatva)

श्रवण कौशल के महत्व को निम्नलिखित बिन्दुओं द्वारा स्पष्ट किया जा सकता हैं--

1. बालक के व्यक्तित्व के विकास में श्रवण कौशल का अधिक महत्व होता हैं। बालक जिन ध्वनियों को बड़ों से सुनता हैं वह उसके मन-मस्तिष्क में अंकित हो जाती हैं। ये अंकित ध्वनियाँ ही बच्चे के भाषा ज्ञान का आधार बनती हैं। श्रवण कौशल अन्य भाषायी कौशलों को विकसित करने की प्रमुख आधारशिला हैं।

2. बालक श्रवण के प्रति जागरूक बनता है तथा श्रवण कौशल द्वारा बालक की श्रवणेन्द्रियों का उपयोग होता हैं।

3. भाषा अनुकरण द्वारा सीखी जाती हैं। नए-नए शब्दों को सुनकर बालक अपने शब्द भण्डार में वृद्धि करता हैं। बालक परिवार के सदस्यों और अध्यापकों की बात सुन7कर स्वयं अपने उच्चारणर, हाव-भाव, उतार-चढ़ाव एवं उचित स्वरगति के अनुसार बोलने का प्रयास करता हैं। इस प्रकार उसकी मौखिक अभिव्यक्ति का विकास होता हैं।

4. शांत रहकर, दूसरों की बात सुनकर व समझकर ही व्यक्ति विचारों के प्रतिपादन हेतु ठोस तर्क प्रस्तुत कर सकता हैं।

5. साहित्य की विभिन्न विधाओं का अध्ययन तथा उनकी व्याख्या को सुनकर ही उसकी विषय वस्तु को ग्रहण किया जा सकता हैं। बालक कविता का रसास्वादन और कहानी का आनंद सुनकर ही कर सकता हैं।

श्रवण कौशल में ध्यान देने योग्य बातें

श्रवण कौशल को विकसित करने के लिए निम्नलिखित बातों की तरफ ध्यान देना जरूरी हैं--

1. बालक श्रवण में रूचि रखें।

2. बालक में धैर्यपूर्वक सुनने की क्षमता होनी चाहिए।

3. बालक में भाव ग्रहण करने की क्षमता होनी चाहिए।

4. बालक को हिन्दी ध्वनि, ध्वनि के प्रकार एवं उनके वर्गीकरण का पूरा ज्ञान होना चाहिए।

श्रवण कौशल भाषा शिक्षण का महत्वपूर्ण सोपान है। श्रवण कौशल का शिक्षण किस प्रकार किया जाना चाहिए? यह एक बहुत ही महत्वपूर्ण विषय है। छात्रों में श्रवण कौशल का विकास करने के लिए शिक्षक को निम्नलिखित विधियों, कियाओं, सामग्री एवं उपकरणों की सहायता लेनी चाहिए--

1. प्रश्नोतर

प्रश्नोत्तर प्रणाली एक महत्वपूर्ण विधि है। शिक्षक को पढ़ाई गई सामग्री पर कक्षा में प्रश्न पूछने चाहिए। कक्षा में प्रश्न पूछने से यह पता चल जाएगा कि छात्र सुनकर विषय वस्तु को ग्रहण कर रहे हैं या नहीं। प्रश्न कक्षा के सभी छात्रों से पूछे जाएं। प्रश्न पूछने से छात्र सावधान हो जाते हैं तथा शिक्षक की बात को ध्यानपूर्वक सुनते हैं।

यह भी पढ़े; श्रवण कौशल का अर्थ, उद्देश्य, महत्व

2. सस्वर वाचन

शिक्षक द्वारा किए गए आदर्श वाचन से छात्र शुद्ध उच्चारण, गति, विराम चिह्नों आदि का ज्ञान करते हैं। शिक्षक को चाहिए कि वह छात्रों से अनुकरण वाचन कराए। इससे यह पता चल सकेगा कि छात्र ध्यान से पाठ्यवस्तु को सुन रहे हैं या नहीं। अतः छात्रों द्वारा सस्वर वाचन कराने से उनमें श्रवण कौशल का विकास किया जा सकता है।

3. भाषण

भाषण द्वारा बालक में मौखिक भाषा का विकास किया जाता है परन्तु इसके द्वारा श्रवण कौशल का भी विकास किया जा सकता है। भाषण द्वारा बालक की श्रवणेन्द्रियों का विकास किया जा सकता है। भाषण देने से पूर्व शिक्षक बालकों को यह बता दें कि वे उसके भाषण को ध्यानपूर्वक सुनें क्योंकि उसके पश्चात् उनसे भाषण पर प्रश्न पूछे जायेंगे। शिक्षक छात्रों से प्रश्न पूछकर यह पता लगा सकता है कि उन्होंने भाषण को ध्यानपूर्वक सुना है या नहीं।

4. कहानी कहना तथा सुनना

बालकों को रोचक कथाएँ, कहानियाँ जैसे-- परियों की, राजा-रानी की तथा पशु-पक्षियों आदि की कहानी सुनानी चाहिए। इसके पश्चात् उसी कहानी को बालकों से सुननी चाहिए। इससे यह पता लग जायेगा कि बालकों ने कहानी को सुना है या नहीं।

5. **श्रुत-लेख**

श्रुत लेखन मे शिक्षक किसी गद्यांश आदि को बोलता जाता है और छात्र सुनकर लिखते चलते हैं जो छात्र ध्यानपूर्वक सुनेगा वह संपूर्ण सामग्री की शुद्ध लिख लेगा तथा उसका कोई अंग भी शेष नहीं छूटेगा एवं जो छात्र ध्यान-पूर्वक नही सुनेगा उसके बीच-बीच में कुछ शब्द या वाक्यांश छूट जाएंगे। इस प्रकार भी बालकों में श्रवण कौशल का विकास किया जा सकता हैं।

6. **वाद-विवाद**

श्रवण कौशल का प्रशिक्षण देने के लिए वाद-विवाद भी एक महत्वपूर्ण क्रिया हैं। वाद-विवाद में छात्र को प्रत्येक बात ध्यान-पूर्वक सुननी होती है क्योंकि बिना सुने वे दूसरे पक्ष की बात का उत्तर नहीं दे सकेंगे और न अपने तर्क को प्रस्तुत कर सकेंगे। शिक्षक को सभी छात्रों को वाद-विवाद के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए तथा वाद-विवाद की समाप्ति पर सभी छात्रों से प्रश्न पूछकर यह जाँच करनी चाहिए कि वे वाद-विवाद के तर्कों को ध्यान-पूर्वक सुन रहे थे या नहीं।

7. **दृश्य-श्रव्य सहायक सामग्री का प्रयोग**

श्रवण कौशल को विकसित करने तथा उच्चारण संबंधी दोषों को दूर करने के लिए ग्रामोफोन, टेपरिकार्डर, रिडियों, चलचित्र, दूरदर्शन तथा विडियों की सहायता ली जा सकती हैं। इन साधनों की सहायता से कहानी, कविता, महापुरूषों के भाषण, नाटक तथा विभिन्न शैक्षिक व मनोरंजन कार्यक्रम सुने जा सकते हैं।

5. बालक की श्रवणेन्द्रियाँ ठीक होनी चाहिए।
6. शिक्षक का उच्चारण शुद्ध होना चाहिए।
7. आदर्श वाचन करने के बाद शिक्षक को बालकों से प्रश्न पूछने चाहिए।

यह भी पढ़े; श्रवण कौशल शिक्षण की विधियाँ/क्रियाएं

Q.33: श्रवण कौशल को विस्तार से समझाइए।

उत्तर : श्रवण केवल वक्ता के बोलने पर शांत रहना ही नहीं है बल्कि श्रवण एक प्रक्रिया है जिसके द्वारा वक्ता को स्वीकार किया जाता है उसके संदेश का अर्थ समझकर उसके प्रति अपनी अनुक्रिया देना भी होता है । वक्ता का वक्रता दोनों प्रकार का हो सकता है । वह शाब्दिक भी हो सकता है और अशाब्दिक भी।

सुनना एवं श्रवण में अंतर है सुनना श्रवण की प्रथम स्थिति है सुनना तब संभव होता है जैसे

ही कोई आवाज की उपस्थिति होती है और हमारे कान की शक्ति उसे मस्तिष्क तक पहुँचाती है सुनना, काम के द्वारा होता है जबकि श्रवण मस्तिष्क के द्वारा।

श्रवण एक अत्यन्त ही महत्त्वपूर्ण कौशल है यह माननीय जीवन में भाषा संबंधी प्रथम आवश्यक शर्त है। शिशु का भाषा ज्ञान सर्वप्रथम श्रवण द्वारा ही होता है यदि शिशु किसी कारणवश सुन न पाये तो वह बोलने की क्षमता या शक्ति भी नहीं रखता। यही कारण है कि यह देखा गया है कि जो गूंगे होते हैं उनमें श्रवण इन्द्रियाँ सही नहीं होती।

श्रवण का प्रत्यय

श्रवण एक सक्रिय प्रक्रिया है, सक्रियता के अभाव में श्रवण संभव नहीं हो सकता।

श्रवण प्रक्रिया को एक रेखाचित्र द्वारा भी दर्शाया जा सकता है

अदा → प्रक्रिया → प्रदा

Input → Processing → Output

उपरोक्त प्रक्रिया में अदा या Input के अंतर्गत वक्र द्वारा कही गई अनुक्रिया है।

अदा के अंतर्गत वक्ता द्वारा कही गई बातों को तीन वर्गों में विभाजित किया जा सकता है ।

(i) आधार भूत प्रक्रिया- इसके अंदर शब्दकोष का ज्ञान,व्याकरण का ज्ञान एवं आवाज इत्यादि आते हैं।

(ii) आधारभूत प्रक्रिया पर आश्रित प्रक्रिया- इसके अंतर्गत सामान्य ज्ञान, जीवन के अनुभव या दूसरे शब्दों में विषय वस्तु कहा जा सकता है।

(iii) पारिस्थितिक प्रक्रिया- परिस्थिति के अनुसार प्रभावित होने वाला वक्तव्य जिसका प्रयोग वक्ता अपने संभाषण में करता है।

उपरोक्त बिन्दुओं का संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है-

(i) प्रथम आधारभूत प्रक्रिया के अंतर्गत श्रोता, पूरी तरह प्रसारित की जाने वाली विषयवस्तु पर निर्भर करता है एवं उसके अनसार संदेश का अर्थ समझता है । प्रसारित सदश को अनेक स्तरों पर विश्लेषण किया जाता है क्योंकि प्रसारित संदेश में, यदि इसे एक प्रणाली के रूप में देखे तो इसके अंतर्गत शब्द,शब्द कथन, कथन, संयुक्त वाक्यों में सम्बद्ध होकर श्रोता तक पहुंचते हैं। प्रथम आधारभत प्रक्रिया के अंतर्गत श्रोता भाषा संबंधी ज्ञान, व्याकरण इत्यादि पर

आधारित ज्ञान द्वारा संदेश के अर्थ को समझता है।

(ii) आश्रित प्रक्रिया के अंतर्गत श्रोता अपनी व्यक्ति पृष्ठभूमि एवं ज्ञान का उपयोग संदेश को समझने में करते हैं। इस समझ के अंतर्गत श्रोता के अपने जीवन-अनुभव की भी प्रमुख भूमिका होती है।

(iii) पारिस्थितिक प्रक्रिया- इसके अंतर्गत श्रोता, वक्ता के वक्तव्य का वह भाग ग्रहण करता है जो वक्ता परिस्थिति के अनुसार, विषयवस्तु को तैयार कर प्रस्तुत करता है।

उपरोक्त वर्णत प्रक्रियाएं वार्तालाप के समय तीनों प्रकार की प्रक्रिया पर आधारित हो सकती हैं या किसी विशेष प्रक्रिया पर निर्भर हो सकती हैं-

"श्रवण कौशल के उद्देश्य"

श्रवण कौशल के विशेष उद्देश्य निम्नलिखित योग्यताओं के विकास हेतु होती है-

(1) इसका प्रथम उद्देश्य है एक अनुभवी वक्ता के द्वारा कही गई, किसी विषय का अर्थ समझ पाना।

(2) आदेश या निर्देश ग्रहण कर पाना ।

(3) विभिन्न प्रकार के वार्तालाप को सुनकर समझ पाने की योग्यता का विकास करना जैसे रेडियो द्वारा प्रसारित वार्ता, सूचना प्रसारण या किसी घटती हुई घटनाओं की कमेन्ट्री

(4) उच्च स्तर के भाषण इत्यादि को समझ पाना समूह वार्ता, डॉक्यूमेंट्री फिल्म, नाटक एवं चलचित्र को गहराई से समझ पाना।

(5) अन्य व्यक्तियों के विचारों को आदरपूर्वक एवं ध्यानपूर्वक सुनने की योग्यता उत्पन्न करना। '

"श्रवण कौशल का महत्त्व"

(1) श्रवण कौशल के विकास में व्यक्ति समझने की शक्ति बढ़ती है।

(2) श्रवण कौशल के विकास से भाषण कौशल था अपने आप विकास हो जाता

(3) श्रवण कौशल का विकास विभिन्न विषयों के ज्ञान को समृद्ध बनाता है।

(4) विभिन्न अनुभवी वक्ताओं को ध्यानपूर्वक सुनने से श्रोता में भी उसी प्रकार के उच्च

कोटि के वक्तव्य देने की क्षमता उत्पन्न होती है।

(5) श्रवण कौशल के विकास से, भाषण कौशल का विकास एवं इसके कारण आत्मविश्वास में वृद्धि होती है।

'श्रवण के प्रकार'

सामान्य श्रवण- कई बार ऐसी बातें सुनी जाती हैं जिसका कोई विशेष उद्देश्य नहीं होता जैसे सामाजिक संदर्भ में हम कई प्रकार के व्यक्तित्वों से मिलजुलकर उनकी बातें सुनते हैं।

केन्द्रित श्रवण- यह अत्यन्त महत्त्वपर्ण होता है क्योंकि इसका एक प्रमुख उद्देश्य होता है उदाहरण के लिए किसी विषय सामग्री को समझकर किसी प्रकार का उपलब्धि पाना । इस प्रकार के श्रवण में श्रोता अत्यधिक एकाग्रता के साथ वक्ता के वक्तव्य को सुनता है ।

"श्रवण-कला का शिक्षण"

श्रवण कला के शिक्षण की दो विधियाँ अपनाई जाती हैं-

(1) कार्य आधारित विधि, (2) कहानी आधारित विधि

प्रथम विधि के अंतर्गत श्रोता. वक्ता को ध्यानपूर्वक सुनता है साथ ही उसके द्वारा दिये । गये कार्यों को करता है उदाहरण के लिए जब श्रोता, किसी विषय या पाठ को वक्ता के द्वारा सुनता है और उसके बाद उस पाठ में दी गई निर्देशों का पालन करते हुए कुछ प्रश्न हल करता है, किसी तालिका को भर पाता है उसके प्रमुख बिन्दुओं को नोट भरता हे या कर पाता है तो यह इस विधि की सफलता को दर्शाती है।

दूसरी विधि कहानी दर आधारित है श्रोता वक्ता के द्वारा किसी कहानी को सुनकर उससे संबंधित, भविष्य कथन कर पाता है उसमें निहित विषय-वस्तु से संबंधित चर्चा में सक्रिय रूप से भाग ले पाता है तो यह विधि श्रवण कौशल के विकास में महत्त्वपूर्ण होती हैं ।

शिक्षण में श्रवण-कौशल

शिक्षण के दौरान शिक्षण के तीन आधार कहे गये हैं-

(i) शिक्षक, (ii) विद्यार्थी, (iii) विषय वस्तु

इन तीनों प्रमुख बिन्दुओं पर आधारित श्रवण कौशल को विकसित करने के लिए निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना आवश्यक है

(1) कक्षा का आकार- कक्षा के आकार के अनुसार शिक्षक विद्यार्थियों पर व्यक्तिगत ध्यान देने योग्य हो सकता है यदि कक्षा में कम विद्यार्थी हों तो शिक्षक द्वारा शिक्षण प्रभावशाली हो सकता है अन्यथा नहीं।

(2) आंखों से आंखों का सीधा सम्बन्ध- आंखों का सीधा संपर्क यदि शिक्षक और विद्यार्थियों के बीच हो तो श्रवण की गुणवत्ता बढ़ जाती है।

(3) भावनात्मक संबंध- शिक्षक को सुनते समय विषय पर ध्यान हो साथ ही खुले दिमाग से उसे ग्रहण किया जाये अन्यथा भावनात्मक प्रभाव बढ़ने पर छात्र पूरी तरह विषय-वस्तु को नहीं सुन पाते।

(4) कोलाहल या शोर का न होना- श्रवण की गुणवत्ता हेतु यह एक महत्त्वपूर्ण शर्त है कि वातावरण में शोरगुल न हो अन्यथा विद्यार्थी शिक्षक के भकृत्य को एकाग्रतापूर्वक नहीं सुन सकेंगे।

(5) शिक्षण एक मानसिक चुनौती है- यहाँ यह ध्यान देने योग्य है कि विद्यार्थी मानसिक रूप से कला में उपस्थित हो अन्यथा कक्षा में शारीरिक उपस्थिति तो होती है परन्तु मस्तिष्क कहीं और व्यस्त होने के कारण श्रवण भी बाधित होगी।

(5) लगातार प्रश्न पूछना- शिक्षण के समय यदि लगातार प्रश्नों का सिलसिला भी जलता रहे तो यह ज्ञात किया जा सकता है कि विद्यार्थी सक्रिय रूप से सन रहे हैं या नह।। प्रश्नों के द्वारा प्रमुख बिन्दु पूछा जा सकता है पूर्व ज्ञान से संबंध के बारे में पूछा जा सकता है।

(7) भाषण या वक्तव्य की गति- प्रत्येक विद्यार्थी के सुनने की क्षमता एवं ग्रहण करन की गति में भिन्नता पाई जाती है अतः शिक्षक को विषय वस्तु प्रस्तुत करते समय इसका ध्यान रखना चाहिये।

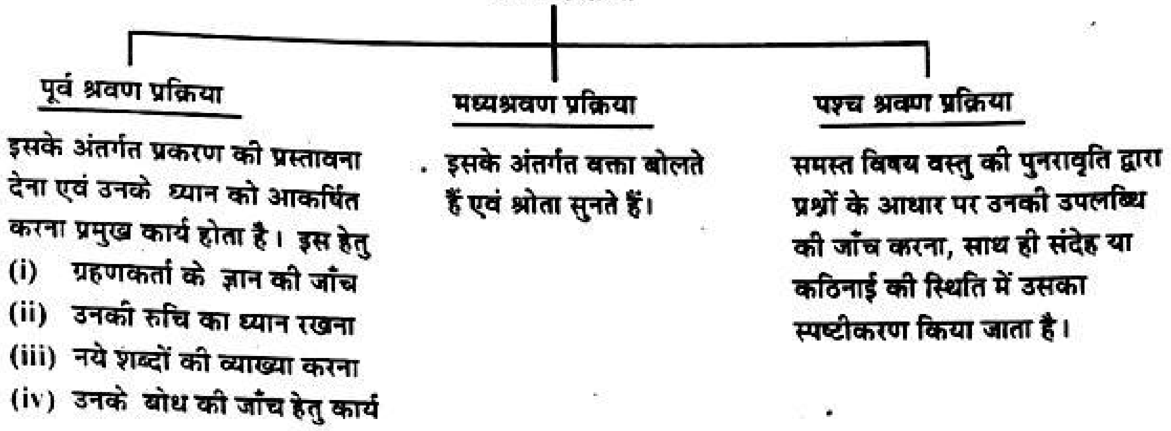

श्रवण प्रक्रिया को सूक्ष्म एवं वृहद श्रवण कौशल के रूप में भी समझा जा सकता है-

'श्रवण का सूक्ष्म कौशल'- इसकी निम्नलिखित विशेषताएं होती हैं-

(1) सारांश जानने हेतु सुनना

(2) विशेष सूचना जानने हेतु सुनना।

(3) भाषा के प्रमुख शब्दों को समझकर, विषय वस्तु को सम्मझना।

(4) अनजाने शब्दों को हाव-भाव द्वारा समझकर विषयवस्तु को समझना।

(5) वक्तव्य या भाषण की सूक्ष्मता को पहचान पाना।

(6) भाषा की सूक्ष्मता को याद रख पाना।

(7) शब्दों के संक्षिप्त रूप को पहचान पाना।

'श्रवण का वृहत कौशल'- इसकी निम्नलिखित विशेषताएं होती हैं-
(1) गहनता से सुनना।
(2) भाषा के विभिन्नता को समझ पाना ।
(3) भाषा के वार्तालाप पद्धति को समझ पाना ।

(4) विषयवस्तु को अपनी समझ अनुसार प्रस्तुत कर पाना ।।
उपरोक्त विस्तृत विवरण श्रवण कौशल की बारीकियों को भली भाँति उजागर करती हैं जिनका ध्यान रखकर श्रवण-कौशल को सफलतापूर्वक विकसित किया जा सकता है।

श्रवण कौशल के विकास की समस्याएं (Problems in the development of hearing skills):

सामान्य रूप से यह देखा जाता है कि अनेक छात्र शिक्षक द्वारा विषय वस्तु को ध्यान पूर्वक नहीं सुनते हैं इससे शिक्षक क्रोधित होकर उन पर अनुशासनहीनता का आरोप लगाते हैं तथा उनको दंड प्रदान करते हैं इससे उनका मनोबल टूट जाता है तथा छात्र विद्यालय व्यवस्था में अरुचि करने लगते हैं। श्रवण कौशल के विकास में कुछ प्रमुख समस्याएं हैं जिनका वर्णन निम्नलिखित रुप से किया जा सकता है-

- **शैक्षिक वातावरण का अभाव (Lack of educational environment)-**

प्रायः देखा जाता है कि शिक्षक द्वारा कक्षा में शैक्षिक वातावरण तैयार किए बिना ही गठन प्रारंभ कर दिया जाता है अर्थात शिक्षण प्रारंभ कर दिया जाता है। इस स्थिति में छात्र पूर्ण मनोयोग के साथ श्रवण नहीं कर पाते हैं ,क्योंकि वह मानसिक रूप से श्रवण करने के लिए तैयार नहीं होते हैं|

🎬 कठिन भाषा का प्रयोग (Use of difficult language)-

जब शिक्षक द्वारा अपने कथन में या प्रस्तुतीकरण में कठिन भाषा का प्रयोग किया जाता है, तो इस स्थिति में छात्र विषयवस्तु के भाव को समझ नहीं पाता है और ध्यानपूर्वक श्रवण नहीं कर पाता है ,क्योंकि उस श्रवण के प्रतीक उसमें कोई रुचि नहीं होती है|

🎬 अशुद्ध उच्चारण (Mispronunciation)-

सामान्य रूप से अनेक शिक्षकों में ही उच्चारण संबंधी दोष पाए जाते हैं जिसके आधार पर छात्र उनके द्वारा प्रस्तुत विचारों को ध्यान पूर्वक नहीं सुनते हैं| प्रत्येक छात्र यह जान जाता है कि प्रस्तुत सामग्री ज्ञानवर्धक एवं स्पष्ट नहीं है, तो उसके प्रतिभा ध्यान नहीं देते हैं|

🎬 शिक्षण अधिगम सामग्री के प्रयोग का अभाव(Lack of use of teaching materials)-

श्रवण कौशल के विकास पर उस समय बाधा उत्पन्न होती है जब शिक्षक द्वारा विषयवस्तु के प्रस्तुतीकरण में शिक्षण अधिगम सामग्री का प्रयोग नहीं किया जाता है | शिक्षण अधिगम सामग्री के अभाव में छात्र एक मूक श्रोता की भांति कार्य करते हैं तथा उनकी सामग्री में कोई रूचि नहीं होती है | परिणाम स्वरूप छात्रों में श्रवण कौशल का विकास नहीं हो पाता है|[४]

श्रवण कौशल विकास हेतु उपाय एवं समस्याओं का समाधान (Measures for hearing skills development and solutions to problems):

भाषा शिक्षक का यह प्रमुख दायित्व होता है कि वह भाषा संबंधी कौशलों के विकास में अपना पूर्ण योगदान प्राप्त करें| श्रवण कौशल भाषा का प्रथम एवं महत्वपूर्ण क्वेश्चन है इसलिए कक्षा एवं विद्यालय स्तर पर श्रवण कौशल के विकास हेतु तथा इसके विकास मार्ग में आने वाली विभिन्न समस्याओं के समाधान के लिए निम्नलिखित उपाय करने चाहिए-

1. छात्रों की योग्यता के अनुसार शिक्षण प्रदान करना चाहिए अर्थात प्रस्तुत सामग्री का स्वरूप छात्रों की योग्यता के अनुरूप होना चाहिए जिससे छात्र उसको पूर्ण रूप से सुन सकें|

2. छात्रों के समक्ष सामग्री के प्रस्तुतीकरण से पूर्व कचा कच का वातावरण इस प्रकार का होना चाहिए जिससे छात्र शिक्षक के प्रस्तुतीकरण को ध्यान पूर्वक सुन सकें| जैसे बैठने की उचित व्यवस्था तथा शांति का वातावरण |

3. श्रवण कौशल के विकास हेतु छात्र की मनोदशा का ज्ञान करना भी एक शिक्षक के लिए आवश्यक है ,क्योंकि छात्र मानसिक रूप से जब तक श्रवण के लिए तैयार नहीं होगा तब तक श्रवण कौशल का विकास संभव नहीं होगा |

4. शिक्षक को सामग्री के प्रति करण से पूर्व की सभी समस्याओं का समाधान कर देना चाहिए इससे छात्रों को दो प्रकार से लाभ होता है| प्रथम अवस्था में छात्र शिक्षक के प्रति विश्वास रखने लगता है तथा दूसरी अवस्था में वह उसके तथ्यों को ध्यानपूर्वक सुने लगता है|[५]
https://youtu.be/zpFEnTw2TDo?si=bnXYI3f0Oo5_sPvH